ओ३म्

... आरोह तमसो ज्योति...

अन्धकार से ऊपर चढ़, प्रकाश में आ

Aroha tamaso jyoti

May we rise above darkness and move towards light

दीपावली

आर्योदय विशेषांक

एवं

यूथ मैगज़ीन

deepavali

Aryodaye No. 378 *cum* Youth Magazine Vol. 14

October 2017

ARYA SABHA MAURITIUS & ARYA YUVAK SANGH

CONTENTS

विषय-सूची

पृष्ठ Page

A word of thanks - Dr O.N. Gangoo 1
Message from Hon. Pravin Kumar Jugnauth Prime Minister of Mauritius 2
Message from H.E. Shri Abhay Thakoor, High Commissioner of India 3
ज्योति से ज्योतित हो ! - *श्री ब. तानाकूर* 5
पग बढ़े प्रकाश की ओर - *डॉ० उ. न. गंगू* 6
दीपावली एवं दयानन्द-निर्वाण - *श्री एस. प्रीतम* 7
ऋषि-निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य पर - *श्री ह. रामधनी* – *मनुष्य जीवन सफल कैसे बने* – *श्री मनमोहन आर्य* 7-8
ऋषि-निर्वाण एवं दीपावली – *श्रीमती ध. रामचरण* 9-10
महर्षि दयानन्द और देव यज्ञ - हवन का महत्व - *श्रीमती म. गजाधर* 10-11
दीया - *श्री एस. मोहाबीर* 12
प्रह्लाद रामशरण को मिला २० वाँ हिन्दू रत्न सम्मान - *डॉ० उ. न. गंगू* 13-14
जिज्ञासा - *श्रीमती लीलामणी करीमन* 15
प्रकाश का प्रतीक दीपावली - *पंडिता अन्जनी महिपत* 16-17
महर्षि दयानन्द के वेद-भाष्य - *पंडित ध. रिकाई* 17
शिक्षा-प्रचारक महर्षि दयानन्द - *पंडिता विद्वन्ती जहाल* 18-19
महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा - *पं० वि. उमा* 19-20
चलें हम दुखि से भद्रता की ओर - *पंडिता सत्यम चमन* 21
ओम् स्योना पृथिवी - *पंडिता प्रे. लीलकन्त* 22-23
युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज और दीपावली - *श्रीमती प्री. जीबन* 23-24
वैदिक-यज्ञ - *डॉ० वि. सितिजोरी* 24-25
दीपावली महोत्सव - *डॉ० ऋ. मोकूनलाल* - Deepavali Mahotsava 26-27
सामाजिक गतिविधियाँ - *श्री एस. प्रीतम* 27-28
रिपाई आर्यसमाज की गतिविधियों में एक नवीनता - *श्रीमती ली. करीमन* 28
पूर्वीय प्रान्त में दर्शनाचार्य आशीष जी की प्रचार-यात्रा - *पंडिता प्रे. लीलकन्त* 29
Divali - Light is might - *Dr Indradeo Bholah Indranath* 29
Praise, Prayer, Worship of God - *Dr Acharya D. Vedalankar* 30
Deepavali 2017 - A burning lamp is seen by its own light - *Yogi B. Mokoonlall* 30-31
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन 32
Les Deux ailes de l'âme - *Shri Narainduth Ghoorah* 33-34

Youth Magazine

Deepavali and Rishi Nirvan – *Mr Dharamveer Gangoo* 35
Divali and Arya Samaj - *Prof. S. Jugessur* 35-36
Divali – The Significance of Light – *Mr S. Nowlotha* 36
DAV College South Rose Belle - *Dr O.N. Gangoo* 36-37
Rubber Tire Competition - *DAV College Port Louis* 37
My Visit to Mauritius - *Shri Ramesh Gupta* 38
Deepavali & The inner Light - *Shri Sookraj Bissessur* 38-39
Farewell Address by Acharya Ji Darshanacharya - *Yogi B. Mokoonlall* 39-40

आर्योदय

1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504,
Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक - Chief Editor :

डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न*
Dr Oudaye Narain Gangoo, *Ph.D, O.S.K, G.O.S.K, Arya Ratna*

सह सम्पादक - Editor :

श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न*
Shri Satyadeo Peerthum, *B.A, O.S.K, C.S.K., Arya Ratna*

सम्पादक मण्डल - Editorial Team :

(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी, आर्य भूषण*
Dr Jaychand Lallbeeharry, *Ph.D, Arya Bhooshan*

(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
Shri Balchand Tanakoor, *P.M.S.M, Arya Ratna*

(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
Shri Naraindra Ghoorah, *P.M.S.M, Arya Bhooshan*

(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
Prof. Soodursun Jugessur, *D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhooshan*

(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya

(६) श्रीमती लीलामणि करीमन, *एम.ए., वाचस्पति*
Mrs Lilamunnee Kureeman, *M.A., Vachaspati*

नोट - *यह आवश्यक नहीं कि इस अंक में संगृहीत लेखों का दायित्व सम्पादक पर हो। लेखक स्वयं उत्तरदायी है।*
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

प्रकाशक - आर्य सभा मॉरीशस

वार्षिक शुल्क - रू० २००/-

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

A WORD OF THANKS

At the request of the Arya Sabha, our Prime Minister, Hon. Pravin Kumar Jugnauth and His Excellency, The High Commissioner of India, Shri Abhay Thakoor have graced this special issue of the Aryodaye by sending us Deepavali Messages. Our respected writers have been kind enough to spare some of their precious time to write articles meant for this special issue.

We would like to express our grateful thanks to them all.

We sincerely hope that in the future, too, we will get similar contribution.

Kindly accept our sincere gratitude.

We wish you all a very happy Deepavali. May God lead us to light and shower His blessings on our country and on us.

O.N. Gangoo (Dr)
Editor-in-chief

दीपावली अभिनन्दन

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतंगमय।

दीपावली के शुभावसर पर

आर्य सभा मोरिशस

आप परिजनों की
अखण्ड सुख-समृद्धि
की मंगल कामना करती है ।

Deepavali Abhinandan

Asato mā sad Gamaya
Tamaso mā Jyotir Gamaya
Mrityor mā Amritam Gamaya

Oh God ! Lead us

from untruth to truth
from darkness to light
from mortality to immortality

The President and Members of
Arya Sabha Mauritius
wish you a Happy & Prosperous
Deepavali

19 October 2017

Prime Minister
Republic of Mauritius

MESSAGE

It gives me great pleasure to associate myself with the publication of this Souvenir Magazine in the context of celebrations marking the Divali Festival and Rishi Nirvan Divas by the Arya Sabha Mauritius this year.

Divali is one of the most important festivals of the Hindu faith, celebrated among the Indian diaspora throughout the world. Festivals such as Divali remind us of our duty to promote values, truth, integrity, brotherhood and peace. The more we help others, the better a person we become. This philosophy is universal. Religions may be different, but teachings are same. The beauty and strength of a nation lies in unity within diversity and Mauritius is a vivid symbol for this.

This festival symbolises the victory of good over evil and immortalises the teachings of Swami Dayanand Saraswati, founder of the Arya Samaj. On the occasion of Divali, a special thought goes to the founder of Arya Samaj, who attained Nirvana on this auspicious Day. Swami Dayanand's mission was not to start or set up any new religion, but to ask humankind for universal brotherhood through nobility as spelt out in Vedas.

For that mission, he founded the Arya Samaj and enunciated the Ten Universal Principles as a code for Universalism with the intention of making the whole world an abode for Nobles - Aryas. He took the difficult step of reforming Hinduism and infused the sense of patriotism among his followers. To the Arya Samajists, Divali has a special meaning and the Rishi Nirvan inspires the followers to the attainment of salvation.

I would like to seize this opportunity to pay a special tribute to Swami Dayanand for his contribution to the advancement of humanity.

I wish a Happy Divali to the President and members of Arya Sabha Mauritius and Mauritians in general. May the light of Divali enlighten our paths and bring joy and happiness to one and all.

Shubh Divali to all of you!

Pravind Kumar Jugnauth
Prime Minister

भारतीय उच्चायोग,
पोर्ट लुइ, मारीशस

सत्यमेव जयते

High Commission of India,
Port Louis, Mauritius

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आर्य सभा, मॉरिशस द्वारा दीपावली के शुभ अवसर पर उनके मुखपत्र आर्योदय का विशेषांक निकाला जा रहा है | दीपावली प्रकाश का वह पर्व है जो हमें प्रतीकात्मक रूप से आतंरिक बुराइयों पर विजय प्राप्त करने और सामाजिक आदर्शों व मानदंडों पर चलने की प्रेरणा देता है | आर्य सभा द्वारा इस अवसर पर महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस भी मनाया जा रहा है| आर्य सभा के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश और उनके द्वारा जीवन को बेहतर बनाने के लिए दिए गए दस सिद्धांत विश्व कल्याण हेतु अमूल्य देन हैं | दीपावली और महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस दोनों ही हमें प्रेरित करते हैं कि सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने के नाते हम अपनी मेधा बुद्धि का सकारात्मक प्रयोग करते हुए समाज और विश्व कल्याण में अपना योगदान दें |

मैं दीपावली के पावन अवसर पर आर्य सभा, मॉरिशस के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह पर्व आप सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और परस्पर भाईचारे की भावना का विस्तार करे |

अभय ठाकुर

सम्पादकीय

ज्योति से ज्योतित हो !

बालचन्द तनाकूर, पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न

हम ज्योति प्रिय प्राणी हैं। हमारा जीवन तो ज्योति पर आधारित है, क्योंकि घोर कालिमा में हम जीवित नहीं रह सकते हैं। अन्धेरा होते ही हम प्रकाश पाने की खोज करने लगते हैं। अतः जहाँ प्रकाश है, वहाँ जीवन है, और जहाँ अन्धकार है, वहाँ मृत्यु ।

लौकिक ज्योति तो हमें सूर्य, चन्द्र, तारे, बिजली और अग्नि आदि से प्राप्त हो जाती है। मानवाविष्कार द्वारा दियासलाई, दीपक, तोर्च, बल्बादि से रोशनी मिल जाती है, जो हमें प्रकाश देने में सहायक होती है। आज विज्ञान वेत्ताओं की नवीनतम खोजों से विविध प्रकार की ज्योति प्रकट हो रही है, जो दुनिया को चौंका रही है, जिससे सुखानन्द प्राप्त हो रहा है। परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि संसार नित्य प्रकाशमान होता रहे ।

मनुष्य को बाहरी ज्योति पर्याप्त नहीं होती है। उसे आंतरिक ज्योति की भी अत्यावश्यकता होती है। उसकी मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक ज्योति तीव्र होने से ही वह पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो पाता है। वेद की सत्य-ज्योति प्रज्वलित होने से ही इनसान अविद्या के अन्धकारों, कुकर्मों, दुर्व्यवहारों आदि से दूर होकर सुपथगामी होते हैं। ऐसे प्राणी का जीवन आलोकित रहता है। उधर जिनकी आंतरिक कालिमा दूर नहीं हो पाती है, वे अपनी दुर्भावनाओं द्वारा अपने को और अन्यों को भी हानि पहुँचाते रहते हैं। जिनके जीवन में मंद-ज्योति की झलक दिखाई देती है, वे कभी ज्योतिर्मय नहीं हो सकते हैं।

मानवजाति को वेद-ज्योति से उद्दीप्त करने के लिए देव दयानन्द ने अपने अनमोल जीवन को समर्पित कर दिया। सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्माकर्म, न्यायान्याय, अन्धविश्वास-भ्रमादि भयंकर अन्धकारों से दूर करने के लिए ही तो वे संसार में आए थे। हम अगर उनके मार्ग-दर्शन पर जीवन व्यतीत करेंगे, तो किसी प्रकार की कालिमा हमें प्रभावित नहीं कर पाएगी।

वेद की दिव्य-ज्योति से प्रभु-ज्योति का सही आभास होता है। उस अद्भुत ज्योति से आत्म-ज्योति, ज्ञान-ज्योति, सत्य-ज्योति, दया-ज्योति, प्रेम-ज्योति, कर्म-ज्योत्यादि चमकने लगते हैं, जिनके द्वारा जीवन ज्योतित होता जाता है, और दूसरे लोग भी प्रभावित होकर मार्ग-दिशा पाकर, ज्योति-से-ज्योति जलाते रहते हैं।

उन्नीसवीं सदी में जब भारतीयों के दयनीय जीवन में मिथ्या-विद्या, विपरीत-विद्या, भ्रामिक-विद्या तथा अन्याय-अत्याचारादि के घोर बादल मण्डरा रहे थे, तब वरद पुत्र दयानन्द ने उन बेबस जीवधारियों का जीवन आलोकित किया। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार करके वेदों का उद्धार किया और वेद-ज्योति से मानवीय मन, बुद्धि, अंतःकरण और आत्मा को ज्योतित किया। हम उस तपस्वी, महात्यागी, परोपकारी और जन-उद्धारक महापुरुष के परोपकारों के प्रति नतमस्तक हैं। आर्य जगत् में देवर्षि दयानन्द का नाम सदा अमर रहेगा और उनके आदर्श जीवन से हर युग में मानवजाति का कल्याण अवश्य होगा ।

दीपावली ज्योति का पर्व है, इस पर्व में हम तेल-बाती जलाकर दीपों को प्रज्वलित करते हैं। जगमगाते दीपकों से घर-आँगन सुशोभित करते हैं। हवन यज्ञादि से घरों को भक्तिमय बना देते हैं। मिठाइयाँ तैयार करके बड़े प्रेम से खाते हैं और सखा-सम्बंधियों में बाँटते हैं । दीपों की लौ हमें यह शिक्षा देती है कि मनुष्य को अपने जीवन का परित्याग करके अन्यों को जगाएँ। दूसरों की ज़िंदगी को सवाँरें, उसे आलोकित करें । हम मानव उद्धार में अपना जीवन समर्पित करते रहेंगे, तो हमारा जीवन रोशन होगा, और अन्यों को भी जीने की रोशनी मिलेगी ।

दीपावली और ऋषि-निर्वाण दिवस तो प्रति वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या को आते हैं, और चले जाते हैं। अगर हम अपने बाहरी और आंतरिक कालिमा को ज्योतित करने में असफल होंगे तो इस महान् शिक्षाप्रद पर्व का क्या महत्व ?

दीपावली से प्रभावित होकर हम अपने पारिवारिक सम्बन्ध को सुदृढ़ बनाएँ, आपसी प्रेम, सहयोग, एकता के प्रकाश से परिवार को चमकाते रहें। यदि सबका मान-सम्मान करते हुए एक दूसरे के प्रति हितकारी बने रहेंगे, तो हमेशा दिवाली ही दिवाली है। दुर्भाग्य से अगर किसी परिवार का सदस्य कुविचारी तथा कुसंस्कारी बन गया, तो उसे सदाचारी और संस्कारी बनाना हमारा कर्तव्य है। कर्मशील प्राणी का परम लक्ष्य है कि वह कर्मयोगी बनकर अन्यों का कल्याण करे, जैसे परोपकारी दयानन्द ने अंतिम साँस लेते समय गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे अबोध अज्ञानी की अज्ञानता रूपी जंग को जलाकर चमका दिया था।

प्रकाशकों के महा प्रकाशक परमात्मा से विनती है कि हम समस्त प्राणी उस परम ज्योति से ज्योतित होकर ज्योतिर्मय बनें और जिन्हें वेद की ज्योति प्राप्त नहीं हुई, उनके ज्ञान-चक्षु खोलें।

हमारी यही कामना है कि सभी हिन्दू परिवारों में सत्य विद्याओं का दीप चमकता रहे और दयानन्द की विचारधारा से हमारा भावी जीवन उदयी व उद्बुद्ध होता रहे। दीपावली में जिस प्रकार एक दीप प्रज्वलित करने से अनगिनत दीप जगमगाने लगते हैं, उसी प्रकार हम अगर देवर्षि जी के तपोमय आदर्श जीवन से प्रेरित होकर सत्य-विद्या की ज्योति जलाते रहेंगे, तो मानव समाज शोभायमान हो जाएगा। दीपावली और ऋषि-निर्वाण-दिवस हम सभी हिन्दू परिवारों के लिए प्रकाशमय और प्रेरणा-दायक हो। ***दीपावली सभी को मंगलमय हो ।***

पग बढ़े प्रकाश की ओर

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के.,आर्य रत्न

आज बच्चा-बच्चा जानता है कि दीपावली प्रकाश-पर्व है। लम्बी उम्र पार करने वाला वह आदमी अब भी बच्चा ही है, जो इतना ही मानता है कि प्रकाश केवल रात का अन्धेरा दूर करता है। वह यह नहीं समझता कि 'प्रकाश' का अर्थ बड़ा व्यापक है। अज्ञान के कूप में पड़ा व्यक्ति अन्धविश्वास-तिमिर का घोर शिकार बना रहता है ।

इस धरा-धाम पर अनेक महापुरुषों ने अज्ञानांधकार को नष्ट करने में दीपों की भाँति अपनी कंचन-काया रूपी तेल-बाती को भस्म कर डाला। उनमें एक थे, प्रकाश-पुत्र - दयानन्दर्षि, जो दीन-दुखियों के प्रति अपनी दया-वृष्टि बरसाते-बरसाते एक दीपोत्सव की शाम को जब कोटि-कोटि दीये विश्व के प्रांगण में पाँव पसारे अन्धेरे से लड़ रहे थे, तब वे प्रकाश-पुंज परमेश्वर का नाम जिह्वा पर लाकर अपना जीवन-दीप बुझा गए ।

महर्षि दयानन्द आजीवन प्रकाश के उपासक रहे। वे अपने अनुयायियों के नयनों से ओझल होने से पूर्व अखिल विश्व को आर्यसमाज जैसी एक ज्योतिर्मयी संस्था दे गए। यदि दो पल रुककर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्धारित आर्यसमाज के नियमों पर एक दृष्टि डाली जाए, तो सुधी जनों को यह समझने में तनिक भी देर नहीं लगेगी कि इन नियमों के अनुसार आचरण करने से प्रत्येक मनुष्य का मन-मस्तिष्क प्रकाशित हो उठेगा, आत्मा ज्योतित हो उठेगी । आर्यसमाज का पहला नियम कहता है – *"सब सत्यविद्या और जो पदार्थ-विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"*

पाठक वृन्द ! विद्या से उत्तम और कोई प्रकाश नहीं । महर्षि ने आर्यसमाज के प्रथम नियम में दो प्रकार की विद्याओं का संकेत किया है। सर्वकालों में एक जैसा रहने वाले ज्ञान को 'सत्यविद्या' कहते हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति – ये तीनों नित्य हैं, अनादि हैं। इस ज्ञान को 'सत्यविद्या' कहते हैं। यह सत्यविद्या का आधार परमेश्वर प्रदत्त 'वेद' है। ईश्वरीय ज्ञान – वेद से बढ़कर और कोई प्रकाश नहीं। वेद ही प्रकाश-स्वरूप परमेश्वर का ज्ञान कराता है। वह सिखाता है कि परमात्मा न्यायकारी है। धर्मयुक्त कर्म करने वाले के जीवन में सुख का प्रकाश भर देता है और अधर्मयुक्त कर्मों में रत व्यक्ति को अन्धकाररूपी दुख के सागर में डुबो देता है।

आठवें नियम में निर्देश किया गया कि *"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।"*
हम अपनी दैनिक प्रार्थना में इसी नियम के अनुसार कहते हैं – **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** - हे प्रभु ! मुझे तम-तिमिर से बचाकर ज्योतिरूपी अमृत प्रदान कीजिए ।

आर्यसमाज का चौथा नियम कहता है – *"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।"*
एक सच्चे आर्य को भली-भाँति विदित है कि 'सत्य' - प्रकाश है और 'असत्य' - अन्धकार ।
सूक्ति है – **'सत्यमेव जयते नानृतम् ।'** – सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं ।

महात्मा कबीर कहते हैं – *साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।*
जा के हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप ।।
लोक भाषा में कहा गया है – *"सच्चे का बोलबाला । झूठे का मुँह काला ।"*

अज्ञानी आदमी सोचता है कि झूठ बोलकर वह दूसरे की हानि करेगा। कार्तिकी अमावस्या से भी घोर अन्धकार का शिकार होने के कारण, वह अज्ञानी नहीं जानता कि अपने ही हाथों अपना गड्ढा खोदता है। आर्यसमाज का पाँचवा नियम कहता है – *"सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।"*

जो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ, सज्जन और परोपकारी व्यक्ति होता है, वह प्रत्येक कार्य विचार कर करता है। वह कार्य करने से पहले आर्ष ग्रन्थों की शिक्षाओं के अनुसार निश्चय कर लेता है कि धर्म और अधर्म क्या है ।

सत्य और धर्म पर्यायवाची शब्द हैं। आर्य सत्य वा धर्म के प्रकाश से विभूषित होकर ऋग्वेद के शब्दों में कहता है – **इन्द्रं वधन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तोऽरुणं** – अर्थात् दुर्गणों का नाश और ऐश्वर्य की वृद्धि करते हुए समस्त जगत् को आर्य बनाना चाहिए । आर्य वही बनता है, जो आर्यसमाज के सातवें नियम को चरितार्थ करता है, यथा – *"सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।"*

प्रेम प्रकाश है, इसलिए सबसे प्रीतिपूर्वक वर्तने का आदेश दिया गया है। अन्यायियों और अधर्मियों से बचके रहना ही यथायोग्य बर्ताव करना है। जो निर्मल और निश्छल मन वाला है, उससे मैत्री-भाव रखना चाहिए और जो छली और कपटी है, उसकी उपेक्षा करनी चाहिए। जो हमारी दया का पात्र है, उसके प्रति हमारे मन में करुणा-भाव होना चाहिए । सुखी जनों के प्रति हमारे मन में मुदिता होनी चाहिए। यही है यथायोग्य वर्ताव ।

यदि हम आर्यसमाज के दसों नियमों को चरितार्थ करेंगे तो अवश्य ही प्रकाश-पथ के पथिक बनेंगे । ऐसे ही प्रकाश-पुत्र दीपावली पर्व मनाने का पूर्णाधिकारी होता है ।

दीपावली एवं दयानन्द-निर्वाण

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न,
मन्त्री आर्य सभा

दीपावली व दिवाली पर्यायवाची शब्द हैं। दीपावली सामासिक शब्द है, जबकि दिवाली में संधी नहीं है, पूरा एक शब्द है। पर दीपावली में दीप + अवली है। दीप दीये को कहते हैं और अवली कतार, पाँति या पंक्ति। अवली से विभिन्न शब्द बनते हैं – जैसे - रचनावली, कवितावली, निबन्धावली या दोहावली। यदि दीप जलाकर एक यहाँ, एक वहाँ रखेंगे तो शोभा नहीं देती। जबकि एक पंक्ति में रखते हैं, तो शोभा बढ़ जाती है। हम मनुष्य सुन्दरता के पुजारी हैं।

इस साल दीपावली पर्व गुरुवार दिनांक १९ अक्तूबर तदनन्तर कार्तिक अमावस्या सम्वत् २०७४ को पड़ा है। वर्ष की सब से अंधेरी रात होती है। यह पर्व इतना पुराना है कि इसमें अनेक कारण आकर जुड़ गए हैं, जैसे एक नदी जितनी लम्बी होती है, उतने ही छोटे-छोटे नदी-नाले आकर मिल जाते हैं और मूल नदी का महत्व बढ़ जाता है – जैसे भारत में गंगा ।

भारत वर्ष आदि से ही कृषि-प्रधान देश रहा है और आज भी यद्यपि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ गया है, फिर भी वहाँ कृषि का बहुत बड़ा महत्व है । इस लिए भारत के अनेक पर्वों का सम्बन्ध खेती-बारी से है, फ़सल से है। जैसे होली, दीपावली आदि, किसानों और मज़दूरों से है, वर्णों से है। श्रावणी पर्व ब्राह्मणों से सम्बन्ध रखती है, तो होली और दिवाली किसानों और मज़दूरों से सम्बन्धित हैं। दीपावली का एक दूसरा नाम शारदीय नवसस्येष्टि याने शरद् ऋतु का नवीन सस्य (फ़सल) काटा जाता है । किसान का घर अन्न, धान, माष, मूँग, बाजरा, तिल और कपास से भर जाता है। खुशी का ठिकाना नहीं रहता । लक्ष्मी-धन की प्राप्ति होती है। यज्ञ-हवन आदि होता।

हम वैदिक धर्मावलम्बी आर्यसमाजी नवजागरण के पुरोधा याने अग्रदूत युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की भूलोक यात्रा की समाप्ति का स्मरण करते हैं। उनके बताये हुए सिद्धान्तों को जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा करते हैं। दिवाली के रोज़ शायद ही कोई आर्य समाजी होगा, जो उनके चयन किये हुए, वेद मन्त्रों से बनाये हुए यज्ञ को अपने गृह पर नहीं करता होगा या अपने गाँव या नगर के आर्य मंदिरों में नहीं जाता होगा ।

पुरोहितों द्वारा मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए दीपावली सम्बन्धीवार्ता आदि संदेश दिये जाते हैं। पिछले कई वर्षों से दूरदर्शन द्वारा दो घण्टे का सीधा प्रसारण करते आ रहे हैं, ताकि हमारे दर्शक दीपावली सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकें। आर्यसभा की ओर से प्रकाशित मुख पत्र 'आर्योदय' का दीपावली विशेषांक निकालते हैं, जिसमें विभिन्न विद्वान् लेखकों द्वारा लेख होते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि हम दयानन्द निर्वाण या ऋषि-निर्वाण की रोज़ खुशियाँ मनाते हैं। वैसे हम आर्यसमाजी मृत्यु को गले लगाते हैं, क्योंकि हमें मालूम है कि मृत्यु शरीर की होती है। आत्मा मरती नहीं, आत्मा तो अमर है। एक घड़ी केलिए सोचिए यदि स्वामी जी शरीर नहीं त्यागते तो कितनी पीड़ा होती, निर्वाण के बाद स्वामी जी को मोक्ष प्राप्त हो गया । इसमें तनिक भी शंका नहीं। वे परमात्मा के सान्निध्य में चिरकाल तक रहेंगे ।

ऋषि-निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य पर

ऋषि-निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य पर मैं प्रसिद्ध विद्वान् श्री मनमोहन आर्य जी का यह प्रभावशाली लेख प्रेषित कर रहा हूँ, जो अविद्या पर आधारित है। यह लेख बड़ा ही प्रासंगिक है, क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कुम्भ के मेले में 'पाखंड-खण्डनी पताका' फहराकर १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रचलित गुरुडम, पाखण्ड, अंधविश्वास इत्यादि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द की थी। तत्कालीन समाज में महर्षि दयानन्द का यह कदम युग-परिवर्तन का सूचक था। आज १४० वर्ष बाद भी मानव समाज में अंधविश्वास और गुरुडम के विभिन्न रूप न केवल पल्लवित हो रहे है, बल्कि निर्भय होकर स्वयं को संपोषित और संवर्धित भी कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती, जिन्होंने हमें अविद्या अंधकार से हटाकर ज्ञान के प्रकाश में लाने के लिए अपने आपको आहुत कर दिया, उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आज हमें आत्मनिरीक्षण कर अपने बहके कदम को सत्पथ पर लाने का पूर्ण करना चाहिए। आशा करते हैं कि यह लेख पाठकों के लिए प्रेरणादायक रहेगा।

हरिदेव रामधनी

मनुष्य जीवन सफल कैसे बनें

लेखक श्री मनमोहन आर्य

हमारे मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? इसका सरल उपाय तो

वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय है, जिसमें ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि का महत्वपूर्ण स्थान है । दर्शनों व उपनिषदों सहित वेदादि भाष्यों का अध्ययन भी उपयोगी है। मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य तो जीवन से अविद्या को दूर करना है। अविद्या दूर करने के लिए विद्या का ग्रहण व उसे धारण करना आवश्यक है। विद्या को धारण कर उसे आचरण में लाना है और विद्या को आचरण में लाने का अर्थ है विद्या के अनुरूप आचरण अर्थात् सदाचरण और सद्कर्मों को करना । वेदों में कहा है कि सद्कर्मों व सदाचरण से मनुष्य मृत्यु को पार हो जाता है और विद्या से उसे अमृत वा मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य को विद्या-प्राप्ति के साथ ईश्वर, आत्मा और सृष्टि का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का करना उसका कर्तव्य सिद्ध होता है । ईश्वर में ध्यान करने के लिए अपने जीवन को ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुरूप व अपने स्वभाव व आचरण को ईश्वर के अनुरूप करना आवश्यक है। ऐसा करके ईश्वर से मेल होने से जीवात्मा दुर्गुण, दुर्व्यस्न व दुखों से दूर हो जाता है। इस स्थिति को प्राप्त होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होना सम्भव है। आप्त पुरुषों के उपदेश वा ऋषि वचनों से ज्ञात होता है कि ज्ञान, कर्म व उपासना की सफलता होने पर मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार कर निर्भ्रान्त हो जाता है। यह जीवन की उच्चतम व श्रेष्ठ स्थिति होती है। सभी मनुष्यों को इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि यह स्थिति सम्पादित हो गई तो इससे यह जन्म व परजन्म दोनों सुधरते हैं। यदि यह स्थिति नहीं बनी तो मनुष्य जीवन की बहुत बड़ी हानि होती है। इसका अनुमान स्वाध्यायशील व्यक्ति, ज्ञानी व विद्वान् ही लगा सकते हैं। एक प्रकार से कहें तो यह वैदिक शिक्षा का सार है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि वह व्यक्ति भाग्यशाली है, जिसके माता-पिता व आचार्य वैदिक धर्मी व धार्मिक विद्वान् हों। उनसे अपनी सन्तान व शिष्यों का जो कल्याण होता है, वह अन्य माता-पिता व आचार्यों के द्वारा नहीं होता है।

मनुष्य जीवन में जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऋषि दयानन्द ने प्रचीनकाल में प्रचलित पंचमहायज्ञों व उनकी विधि का पुनरुद्धार किया है। यह भी महर्षि दयानन्द जी की देश व विश्व के प्रति बहुत बड़ी देन है। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द के अन्य सभी ग्रन्थ मनुष्य की अविद्या को दूर कर उसे विद्वान् बनाते हैं, जिनसे मनुष्य में विवेक उत्पन्न होता है । सन्ध्या वा ईश्वर के ध्यान की प्रेरणा मिलती है। वह नास्तिकता से दूर वा मुक्त होकर ईश्वर का सच्चा उपासक, देशहितैषी वा देशभक्त बनता है। सभी चारित्रिक बुराइयों से ऊपर उठकर एक आदर्श नागरिक बनता है । ऐसे लोगों से ही देश व समाज का हित होता है। ऐसे लोग अपने जीवन को भी महनीय बनाते हैं व देश व समाज के लिए उनका योगदान प्रशंसनीय व महत्वपूर्ण होता है ।

इस पृष्ठभूमि में जब हम आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द और उनके कुछ प्रमुख अनुयायियों के जीवनों पर विचार करते हैं तो हम सभी को स्वाध्यायशील व ईश्वरोपासना सहित समाज-सुधार व दूसरों के कल्याण के कामों में लगा हुआ पाते हैं। उनमें ज्ञान व कर्म का सन्तुलन दिखाई देता है। मन, वचन व कर्म से वह एक होते हैं। ऋषि दयानन्द सच्चे ईश्वर उपासक थे और इसका प्रचार उन्होंने लेख व प्रवचनों सहित अपने जीवन के उदाहरण से भी किया है। वह ऐसे योगी थे, जो लगातार १६ घंटे की समाधि लगा सकते थे। समाधि वह अवस्था होती है, जिसमें ईश्वर का साक्षात्कार होता है। ईश्वर साक्षात्कार मनुष्य की आत्मा के लिए सबसे अधिक सुखदायक व आनन्द की स्थिति होती है। ऐसा सुख व आनन्द संसार के किसी भौतिक पदार्थ में नहीं होता । इसी कारण प्राचीनकाल से हमारे सभी ऋषि व योगी भौतिक पदार्थों, धन व ऐश्वर्य से अधिक महत्व ईश्वर के ध्यान, उसकी उपासना और समाज हित के कार्यों को देते थे। आज यदि हम मध्यकालीन समाज और वर्तमान समाज पर दृष्टि डालें और दोनों की तुलना करें तो हमें आज का समाज कहीं अधिक उन्नत व समृद्ध दृष्टिगोचर होता है । इसका अधिकांश श्रेय महर्षि दयानन्द को देना होगा। उन्होंने समाज से अन्धविश्वास, कुरीतियाँ व पाखण्ड दूर करने के साथ वेद और वैदिक विद्याओं का प्रचार किया । वह ज्ञान की विपुल राशि समाज को दे गये हैं, जिसका जो भी मनुष्य उपयोग करेगा वह उस विद्या धन से सुखी व समृद्ध बनेगा और उसे सबसे बढ़कर जो प्राप्ति होगी वह आत्मसंतोष कह सकते हैं ।

स्वाध्याय का जीवन में प्रमुख स्थान है । इसका ज्ञान उसी को होता है, जो स्वाध्याय करता है । स्वाध्याय के साथ निष्पक्ष व निस्वार्थ भावना वाले विद्वानों के प्रवचनों का भी महत्व होता है । अतः मनुष्य को अच्छी पुस्तकों का संग्रह कर उसका नियमित अध्ययन करना चाहिए। इसका प्रभाव उसके भावी जीवन में पड़ेगा । वह बहुत सी बुराइयों व बुरे कार्मों से बच जाएगा और स्वाध्याय के परिणामस्वरूप श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण कर वर्तमान व भावी जीवन का निर्माण व उन्नयन करेगा । ऐसा जीवन ही सफल जीवन कहा जा सकता है। लेख की समाप्ति पर यह निवेदन करना चाहते हैं कि ऋषि दयानन्द के साथ अन्य महापुरुषों के जीवन को भी सभी मनुष्यों को श्रद्धापूर्वक पढ़ना चाहिए और सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग को अपने जीवन का उद्देश्य बनाना चाहिए । *इत्योम् शम् ।*

ऋषि-निर्वाण एवं दीपावली

श्रीमती धनवन्ती रामचरण,एम.एस.के,आर्य रत्न

ओम् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ।

हे परम प्रभु परमात्मा ! आप अग्निस्वरूप हैं। आप सब रत्नों को धारण कर रहे हैं। हम बार-बार आपका सम्मान करते हैं ।

बिना प्रकाश के हम अंधकार में नहीं जी सकते हैं। सूर्य देवता को देखो ! प्रातःकाल वह अपने प्रकाश से सारे संसार को प्रकाशित करता है। परमात्मा ने हमें यजुर्वेद में मन्त्र दिये कि प्रातः-सायं वेद मन्त्रों से आहुति देकर यज्ञ करें, परम ज्योति को देनेवाले परमात्मा का ध्यान करें। उनको धन्यवाद करें तथा ज्योति या प्रकाश माँगें। *प्रातःकालीन मन्त्र है* – **ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।१।।**

सायंकालिन मन्त्र – **ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।१।।**

प्रातः-सायं हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें प्रकाश दें, ज्योति दें। अन्धकार कोई पसन्द नहीं करता । सब लोग तमस् से दूर भागना चाहते हैं।

'दीपावली' ज्योति का पर्व है, प्रकाश का पर्व है। अग्नि का उत्सव है। यह पर्व कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है। हर साल हम सब बड़ी ही धूमधाम से दीपावली मनाते हैं। भगवान् से सब के लिए सुख-शान्ति माँगते हैं ।

हमारे पूर्वज इस त्योहार को लक्ष्मी-पूजा का पर्व मानते थे। लक्ष्मी का अर्थ – धन-धान्य, ऐश्वर्य है, आदि। प्राचीन भारत में इसे नव सस्येष्टि यज्ञ कहते थे, क्योंकि नये अन्न के आगमन से घरों में किये जाने वाले यज्ञों में नये अन्न की आहुतियाँ दी जाती थीं। यज्ञ से सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है ।

दीपावली के दिन एक बहुत बड़ा सन्देश मिलता है। अठारह सौ तिरासी में आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मिशन पूरा हुआ। वे हम सब को वेद की ज्योति देकर अमर हो गये। भौतिक ज्योति छोड़कर परमात्मा की ज्योति में समा गये। उन्होंने कहा – *'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।'* किसी कवि ने ठीक कहा है- *'तूने खूब रचा भगवान् खिलौना माटी का'* ।

नश्वर शरीर चला जाता है, परन्तु मनुष्य का गुण, कर्म, स्वभाव रह जाता है। परमात्मा की लीला अजीब है। धन्य है, ऐसे ऋषि महान् । अगर ऋषि दयानन्द नहीं आते तो नारी जाति की दशा दयनीय होती, नारी जाति की आवाज़ कौन सुनता ? आज नारी कहाँ से कहाँ तक पहुँच गई है। ऋषि दयानन्द के ऋण कौन चुका सकता है? हम कभी भूल नहीं सकते हैं, जो उपकार उन्होंने हम पर किया है – नारी को मान-सम्मान दिया – माँ को ऊँचा स्थान दिया, वेद पढ़ने का अधिकार दिया । वेद का प्रचार केवल स्वामी दयानन्द ने किया इतिहास के पन्नों के ऊपर में बड़े-बड़े विद्वानों का नाम है, परन्तु वेद ज्ञान के बारे में प्रथम नाम ऋषि जी का आएगा, केवल ऋषि जी का। धन्य हैं, गुरु विरजानन्द के परम शिष्य दयानन्द को ।

धन्य हैं, तुझ को ऐ ऋषि ।
तू ने हमें जगा दिया ।
सो-सो कर लूट रहे थे, तूने हमें बचा दिया ।

वैदिक साहित्य में सत्य और धर्म पर्यायवाचक शब्द समझे जाते हैं – उपनिषद् में कहा गया है –

यो वै स धर्म, सत्यं वै तत्तस्मात्
सत्यं वदन्त माहुर्धर्मवदतीति

अर्थात् निश्चय जो धर्म है, वह सत्य है, यह नियम चाहता है कि अन्धविश्वास अथवा आँख बन्द करके किसी के पीछे चलने की प्रथा दुनिया से उठ जाय ।

१. सत्यविद्या – आदि मूल परमेश्वर है –
२, ईश्वर पवित्र है – उपास्यदेव
३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है – परम धर्म है
४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।
५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए ।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य वर्तना चाहिए ।
८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

क्यों आर्यसमाज को सत्य इतनी खरी वस्तु मालूम हुई ? इसलिए कि वेद और उपनिषदों में ईश्वर को सत्य कहा गया है । 'सत्यम्' शब्द तीन शब्दों का योग है । (स + ति + यम्)

स - जीव को कहते हैं
ति - ब्रह्माण्ड को
यम् - शासक का नाम है

सत्यम् परमेश्वर का नाम इसलिए है कि वह जीव और जगत् दोनों का शासन अर्थात् नियम में रखता है । **तत् सत्ये प्रतिष्ठितम्** *(बृह० अ० ५)* – वह ब्रह्म सत्य में प्रतिष्ठित है – ईश्वर को तभी पा सकते हैं –सत्य को प्राप्त करने और सत्याचरण करने ही से ब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं ।

महर्षि दयानन्द और देवयज्ञ

दिव्य पुरुष महर्षि दयानन्द के उपकारों का उल्लेख करते-करते लेखनी थक जाएगी, जीवन बीत जायेगा, फिर भी उनके उपकार वर्णनातीत ही रहेंगे। देव दयानन्द ने वेदों का डंका बजाया और मनुष्य के मन-मस्तिष्क में बैठे अविद्यांधकार को दूर भगाया। उनकी देन कहाँ तक गिनी जाए? उन्होंने तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं के जाल में फँसे भारत को मुक्त करने में अपना सारा जीवन खपा दिया। बताया कि परमेश्वर एक है, वही संसार का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता एवं नियन्ता है। वह कभी शरीर धारण नहीं करता । ईश्वर की उपासना विधिपूर्वक करनी चाहिए।

कर्मकाण्ड के नाम पर अबोध जनता को स्वार्थियों ने भाँति-भाँति की विधियों में उलझा दिया था। महर्षि ने वैदिक कर्मकाण्ड का प्रचार किया। एक ईश्वर की स्तुति-प्रार्थनोपासना के लिए अपने कालजयी ग्रंथ – 'संस्कार-विधि' में 'ब्रह्मयज्ञ' और 'देवयज्ञ' का विधान किया । उनसे किसी ने पूछा कि होम करने से क्या लाभ है ?

महर्षि ने उत्तर दिया – *"सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से दुख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है ।"*

फिर प्रश्नकर्ता ने पूछा – *"चन्दनादि घिसके किसी के लगावे या घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो, अग्नि में डालकर व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं ।"*

महर्षि ने उत्तर दिया – *"जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते, क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता । देखो जहाँ होम होता है, वहाँ से दूर देश में स्थित पुरुष की नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।"* (सत्यार्थप्रकाश तीसरा समुल्लास)।

महर्षि दयानन्द की उपर्युक्त मान्यता को वर्तमान समय के वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में श्रीमती मधु गजाधर जी ने हमें एक शोधपूर्ण लेख प्रेषित किया है, जो हम अपने पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं ।

डॉ० उदय नारायण गंगू

हवन का महत्त्व

श्रीमती मधु गजाधर

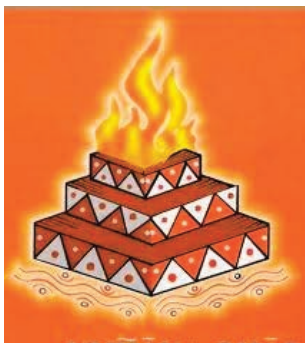

फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर रिसर्च की, जिसमें उन्हें पता चला की हवन मुख्यतः आम की लकड़ी से किया जाता है। जब आम की लकड़ी जलती है तो फ़ॉर्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है तथा वातावरण को शुद्ध करती है । इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस और इसे बनाने का तरीका पता चला। गुड़ को जलाने पर भी यह गैस उत्पन्न होती है ।

टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपनी रिसर्च में ये पाया की यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएँ से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइट जैसे खतरनाक रोग फैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है ।

हवन की महत्ता देखते हुए 'राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान' लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी इस पर एक रिसर्च की । क्या वाकई हवन से वातावरण शुद्ध होता है और जीवाणु नष्ट होते हैं, अथवा नहीं।' उन्होंने ग्रंथों में वर्णित हवन-सामग्री जुटाई और जलाने पर पाया कि ये विषाणुओं का नाश करती है। फिर उन्होंने विभिन्न प्रकार के धुएँ पर भी काम किया और देखा की सिर्फ़ एक किलो आम की लकड़ी जलाने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए, पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन समाग्री डालकर जलायी गयी, एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बॉक्टेरिया का दर ९४% कम हो गया। यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजुद जीवाणुओं का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाज़े खोले जाने और सारा धुआँ निकल जाने के २४ घंटे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से ९६ प्रतिशत कम था। बार-बार परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि इस एक बार के धुएँ का असर एक माह तक रहा और उस कक्ष की वायु में विषाणु दर ३० दिन बाद भी सामान्य से बहुत कम था।

यह रिपोर्ट एथ्नोफार्माकोलीजी के शोध पत्र (research journal of Ethnopharamcology 2007) में भी दिसम्बर २००७ में छप चुकी है ।

रिपोर्ट में लिखा गया कि हवन के द्वारा न सिर्फ़ मनुष्य नहीं, बल्कि वनस्पतियों और फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले बैक्टीरिया का नाश होता है, जिससे फ़सलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है ।

क्या हो हवन की समिधा (जलने वाली लकड़ी)

समिधा के रूप में आम की लकड़ी सर्वमान्य है, परन्तु अन्य समिधाएँ भी विभिन्न कार्यों हेतु प्रयुक्त होती हैं । सूर्य की समिधा मदार की, चन्द्रमा की पलाश की, मङ्गल की खैर की, बुध की चिड़चिड़ा की, बृहस्पति की पीपल की, शुक्र की गूलर की, शनि की शमी की, राहु दूर्वा की और केतु की कुशा की समिधा कही गई है ।

मदार की समिधा रोग को नाश करती है, पलाश की सब कार्य सिद्ध करने वाली, पीपल की प्रजा सन्तति) काम कराने वाली, गूलर की स्वर्ग देने वाली, शमी की पाप नाश करने वाली, दूर्वा की दीर्घायु देने वाली और कुशा की समिधा सभी मनोरथ को सिद्ध करने वाली होती है ।

हव्य (आहुति देने योग्य द्रव्यों) के प्रकार

प्रत्येक ऋतु में आकाश में भिन्न-भिन्न प्रकार के वायुमण्डल रहते हैं। सर्दी, गर्मी, नमी, वायु का भारीपन, हलकापन, धूल, धुँआ, बर्फ़ आदि का भरा होना। विभिन्न प्रकार के कीटाणुओं की उत्पत्ति, वृद्धि एवं समाप्ति का क्रम चलता रहता है । इसलिए कई बार वायुमण्डल स्वास्थ्यकर होता है, । कई बार अस्वास्थ्यकर हो जाता है । इस प्रकार की विकृतियों को दूर करने और अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने के लिए हवन में ऐसी औषधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं, जो इस उद्देश्य को भली प्रकार पूरा कर सकती हैं।

होम द्रव्य

होम-द्रव्य अथवा हवन-सामग्री वह जल सकने वाला पदार्थ है, जिसे यज्ञ (हवन/होम) की अग्नि में मन्त्रों के साथ डाला जाता है ।

(१) **सुगन्धित** – केशर, अगर, तगर, चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, छड़ीला, कपूर, कचरी, बालछड़, पानड़ी आदि ।
(२) **पुष्टिकारक** - घृत, गुग्गुल, सूखे फल, जौ, तिल, चावल शहद नारियल आदि ।
(३) **मिष्ट** - शक्कर, छूहारा, दाख आदि ।
(४) **रोग नाशक** – गिलोय, जायफल, सोमवल्ली, ब्राह्मी, तुलसी, अगर, तगर, तिल, इंद्रा, जव, आमला, मालकांगनी, हरताल, तेजपत्र, प्रियंगु, केसर, सफ़ेद चन्दन, जटामांसी, आदि।

उपर्युक्त चारों प्रकार की वस्तुएँ हवन में प्रयोग होनी चाहिए। अन्नों के हवन से मेघ-मालाएँ अधिक अन्न उपजाने वाली वर्षा करती हैं। सुगन्धित द्रव्यों से विचारों शुद्ध होते हैं, मिष्ट पदार्थ स्वास्थ्य को पुष्ट एवं शरीर को आरोग्य प्रदान करते हैं, इसलिए चारों प्रकार के पदार्थों को समान महत्व दिया जाना चाहिए। यदि अन्य वस्तुएँ उपलब्ध न हों, तो जो मिले उसी से अथवा केवल तिल, जौ, चावल से भी काम चल सकता है।

समान्य हवन सामग्री – तिल, जौ, सफ़ेद चन्दन का चूरा, अगर, तगर गुग्गुल, जायफल, दालचीनी, तालीसपत्र, पानड़ी, लौंग, बड़ी इलायची, गोला, छुहारे नागर मौथा, इनद्रजै, कपूर कचरी, आँवला, जयफल, ब्राह्मी, आदि ।

दीया

श्रीमती शान्ति मोहाबीर, एम.ए., पी.एच.डी.

दीया ज्योति बिखेरता है। बाह्य संसार के तिमिर को चीरकर प्रकाश देता है। स्वयं को जलाकर सभी को आलोकित करता है। दीया तले अंधकार का साम्राज्य सदैव विद्यमान रहता है, परन्तु अपने अंधकार को दूर करने की चिन्ता उसे कहाँ ? बिना खुद को जलाए कोई किसी को प्रकाश कैसे दे सकता है? जलन और तपन की पीर से गुज़रकर, तिल-तिल घुटकर, अपना सर्वस्व न्यौछावर कर ही दीपक अंधकार को तिरोहित करता है ।

दीया आर्य संस्कृति का आधार है। यह मानव-जीवन के परम लक्ष्य का प्रतीक है । प्रेम-त्याग जैसी उदात्त भावनाओं का द्योतक है। भारत में जब अविद्या रूपी विषधर ने डंक मार-मारकर आर्य संस्कृति व सभ्यता को विषाक्त कर दिया था तब महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में एक दीया जला था। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का स्वामी दयानंद ने उद्घोष किया था और अज्ञान के सधन तमस को समाप्त करने हेतु वेद-प्रकाश को शस्त्र बनाया था। दयानंद का निर्वाण हुआ भी तो किस दिन ? प्रकाश के पर्व दीपावली के दिन । मानव के प्रति सच्चे प्रेम व त्याग का जो दीया स्वामी दयानंद जला गये, वह आज भी सत्य और धर्म जैसी सात्विक शक्तियों का प्रमाण दे रहा है। दीया और महर्षि का नाता अटूट है। नवीनता, अद्वितीयता तथा अपूर्वता की बाती और नवजागरण को अमित विस्तारशीलता प्रदान करनेवाले घी से महर्षि वेद का दीया पुनः जला गये ।

चिराग जिस किसी भी धातु से बना हो, वह तम को भंग अवश्य करता है । परन्तु दीपावली का शाश्वत संदेश तो माटी का दीया ही देने में सक्षम होता है। जड़ और चेतन का प्रतीक है, माटी का दीया । चेतना का अनोखा आलोक धारण कर वह आर्यजाति की सांस्कृतिक चेतना को प्रवाहित करता है। माटी का दीया माटी से बनता है, और माटी में ही एक दिन मिल जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे बरफ़ का अस्तित्व कुछ नहीं होता है, अन्त में वह पानी ही बनता है। क्षणभंगुरता तथा अनित्यता का पाठ पढ़ाता है, माटी का दीया । जिस दिन उसकी सृष्टि होती है, उसी दिन उसका नष्ट होना भी निश्चित हो जाता है। मरणधर्मा होते हुए भी वह अपने अल्प जीवनकाल में अपने धर्म से मुँह नहीं मोड़ता है और अपनी दिव्य-ज्योति से संसार का उपकार करता है। हम प्राणियों के जीवन को चैतन्यता प्रदान करना नहीं भूलता है। दम भर के इस मेहमान को मृत्यु का कोई भय नहीं होता है। अपना धर्म निभाते हुए माटी का दीया कहता है –

कुछ दम का मेहमाँ हूँ
ऐ अहले महफ़िल !
चिरागे सहर हूँ
बुझा चाहता हूँ।

मानव-तन भी दीपक की भाँति माटी का ही है। यह देह यहीं की है, यहीं रह जाएगी । पंचतत्व से निर्मित इस शरीर तक सीमित होकर रह जाना परम लक्ष्य से भटक जाना है। आर्य जाति को दीया बनना है। बिन ज्योति जिस प्रकार दीया प्राणहीन होता है, उसी प्रकार आत्मप्रकाश के बिना मानव शरीर अर्थहीन, निराधार तथा पोला होता है। यह काया अत्यंत अहम केवल इसलिए है, क्योंकि इसमें अमृत स्वरूप आत्मा का वास होता है । अहंकार का सर्वनाश कर आत्मतत्व को निखारना मानव-धर्म है। प्रकाश हेतु दीया है, दीया हेतु प्रकाश नहीं। वैसे भी आत्मज्योति हेतु मानव-काया है । देह का लक्ष्य है आत्मज्योति की अभिव्यक्ति। आत्मज्योति ही सर्वस्व है। महाकवि कबीर के शब्दों में, आत्मा को प्रकाशित कर चुका प्राणी नित यही गाता है –

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखण मैं गई मैं भी हो गई लाल।।

देह से हमारी आसक्ति के कारण निर्विकार आत्मा कहीं दूषित व धूमिल न हो जाए और जीवन का अंधकार कहीं अत्यधिक सघन न हो जाए । दीपावली हमें संदेश देती है कि हे मनुष्यो, परम चेतना को प्रकाशमान करो। चेतना के अभाव में माटी के शरीर का क्या बिसात ? अनभिज्ञता गहन तमस् का द्योतक है। शरीर के सही मोल को समझो और आत्मज्योति का इसमें प्रसार कर लो ।

जीवन उसी का आलोकित हुआ, जो दीया बन जलता रहा। नहीं तो दीवाली प्रतिवर्ष मनाती रहेगी और धरा पर फिर भी अंधेरा रहेगा ।

प्रह्लाद रामशरण को मिला २० वाँ हिन्दी रत्न सम्मान

आर्य जगत् को भली-भाँति विदित है कि महर्षि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी उन्होंने अपने ग्रन्थों का प्रणयन हिन्दी में किया। उन्होंने हिन्दी को 'आर्यभाषा' शब्द से अभिहित किया ।

जो लोग महर्षि के सच्चे अनुयायी बने, वे आजीवन हिन्दी के प्रचार-प्रसार में रत रहे और प्रतिष्ठित हुए। ऐसे ही हिन्दी के एक महान् उपासक श्री प्रह्लाद रामशरण जी का नाम देश-विदेश में गर्व से लिया जाता है। मंगलवार १ अगस्त २०१७ को नई दिल्ली स्थित, हिन्दी भवन के सभागार में उन्हें बीसवाँ 'हिन्दी रत्न' सम्मान दिया गया। उस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार प्रह्लाद रामशरण जी ने जो भाषण दिया, वह हम अपने पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत करते हुए आर्य सभा की ओर से उन्हें अशेष बधाई देते हैं ।

डॉ० उदय नारायण गंगू
मुख्य सम्पादक

प्रह्लाद रामशरण जी का व्याख्यान

माननीय संस्कृति एवं पर्यटक मंत्री, डॉ० महेश शर्मा जी, महामहिम श्री जगदीश्वर गोवर्धन, मॉरिशस के हाई कमिश्नर, सम्मानीय कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल एवं अध्यक्ष, हिन्दी भवन, श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी जी, समारोह के अध्यक्ष, मित्रवर डॉ० कमल किशोर गोयनका जी, हिन्दी भवन के मंत्री डॉ० गोविन्द व्यास जी, समारोह में पधारे मित्रगण, सभागार में उपस्थित – विद्वान्-विदुषी समुदाय, भाइयो और बहनो ।

हिन्दू भवन ने, लघु भारत, मॉरिशस के एक सुपुत्र को 'हिन्दी रत्न सम्मान' से नवाज कर जो गरिमामय कार्य किया है, उसके लिए मैं उन्हें अपने परिवार की ओर से और मॉरिशस के समस्त हिन्दी प्रेमियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद समर्पित करता हूँ। भारत की राजधानी की इस प्रतिष्ठित संस्था ने मुझे यह सम्मान देकर, भारत और मॉरिशस के संबंधों की माला में एक पुष्प गुँथा है, जिसकी सुगंध और सौन्दर्य से विश्व का हिन्दी जगत् सुवासित हुआ है।

आगे बढ़ने से पहले मैं, अपने स्वर्गीय शिवोपासक पिताजी, जिनसे मैंने कठोर परिश्रम करना सीखा, मेरी स्वर्गीय सूर्योपासक माताजी, जिनकी भक्ति का प्रभाव मुझ पर पड़ा है और अपने अठानवें वर्षीय जीवित गुरुजी के प्रति मैं नत्मस्तक हूँ, जिनके बदौलत मैं आप सबके बीच खड़ा हूँ ।

आज से अस्सी साल पहले मॉरिशस के एक छोटे से ग्राम में जहाँ न नाई न दर्जी, न पंसारी की दुकान थी, मेरा जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। वहाँ केवल एक सार्वजनिक नल था और उसी के पास आर्यसमाज की 'एक बैठक' जहाँ शाम के समय हिन्दी पढ़ाई जाती थी और उसी में मैंने स्वर, व्यंजन और बारह खड़ी सीखी थी। वहाँ से पाँच-छह किलोमीटर की दूरी पर था सरकारी स्कूल, जहाँ हिन्दी नहीं, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, भूगोल और गणित, क्रियोली माध्यम से पढ़ाई जाती थी, जो हमारी समझ से परे की बात थी। इसीलिए एक ही कक्षा में दो-दो साल बिताने पड़ते थे। बारह साल की उम्र में परिवार ने ग्राम बदला । हम बृज़े-वेर्जेर के निवासी हुए, जहाँ मैंने सोलह साल की उम्र में छठी की। मैं आगे पढ़ना चाहता था, किन्तु फीस न चुका पाने के कारण, मुझे माध्यमिक शिक्षा से वंचित रखा गया । मैंने निराश और नाराज़ होकर घर छोड़ दिया। भारत होता तो घर नहीं लौटता, किसी आश्रम में चला गया होता। एक पहाड़ की गुफ़ा के बगल की चट्टान से जलधारा निकल कर नदी बनती है। उसी जलधारा में सूबह-शाम स्नान करके गायत्री मंत्र का जाप करता और इसी तरह से एक सप्ताह तक फल और गन्ने का रस चूस कर बिताया, तब कहीं जाकर आत्म-बोध हुआ — *"माँ-बाप पढ़ा तो नहीं सकते, किन्तु एक मुट्ठी आहार प्रतिदिन देते हैं।"* बस, एक सप्ताह बाद, आधी रात को मातमी गृह का दरवाज़ा खटखटाया। बिलखती हुई माँ ने मुझे गोद में भर लिया । एक सप्ताह से घर में चूल्हा न जला था। एक ममेरे भाई ने मेरे गायब होने की सूचना अखबार में दे दी थी, जो - चालीस साल बाद, शोध करते समय मेरी आँखों के सामने आ गई थी।

इस घटना के बाद मैं, सड़क निर्माण विभाग में दिनभर पत्थर तोड़कर सड़क की मरम्मत करता रहा, साथ-साथ ग्राम के एक सज्जन से हिन्दी का ट्यूशन लेता रहा। १९५५ में मैंने साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा आयोजित 'परिचय' परीक्षा उत्तीर्ण की और 'प्रथमा' की तैयारी करने लगा। १९५६ के अंत में परिवार ने पुनः ग्राम बदला । हम राजधानी पोर्ट लुई के पास 'वाले दे प्रेत' ग्राम के वासी हुए। १९५७ में मेरे जीवन में एक मोड़ आया । दिन में मज़दूरी करता और शाम को एक शाला में बालक-बालिकाओं को हिन्दी पढ़ाना शूरू किया। कुछ समय बाद, वहीं के दूसरे ग्राम में एक आर्यसमाज बनाया और उसी की शाला में हिन्दी सिखाता रहा। किन्तु हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच का

ट्यूशन जारी रखा। इस तरह से १९६४ में, मैं सरकारी स्कूल के लिए छात्राध्यापक चुन लिया गया और तब हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान्, प्रोफ़ेसर रामप्रकाश से प्रशिक्षण पाकर १९६५ से सरकारी स्कूल में अध्यापन करने लगा। पाँच वर्षों तक अध्यापन के साथ-साथ स्कूल सर्टिफिकेट की पढ़ाई जारी रखी, क्योंकि इसी के जरिए विश्वविद्यालय की पढ़ाई में दाखिला मिल सकता था। इसी समय से मेरा छोटा-मोटा लेख आर्योदय और कांग्रेस पत्रों पर छपने लगा था।

१९६८ में आर्यसभा द्वारा आयोजित एक निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुआ और इसी से जुड़ी शोध सामग्री से आर्यसमाज पर मेरी प्रथम पुस्तक अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुई । १९६९ में महात्मा गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर नई दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार ग्रहण करने हेतु जुलाई १९७० में भारत आया । दिल्ली के मावालंकर भवन में रेल मंत्री गुलजारीलाल नंदा के हस्त से पुरस्कार लेकर, वेंकटेश्वर कालेज में बी.ए. का छात्र बना । चूँकि मैं चौंतीस वर्ष की उम्र में १७-१८ साल के भारतीय छात्र-छात्राओं के साथ बी.ए. कर रहा था, फिर उन तरुण 'सहपाठियों के कार्यकलापों' से उठकर, उन तीन वर्षों में मैंने बहुत कुछ किया। मसलन, मेरे हिन्दी प्राध्यापक हीरा बल्लभ तिवारी और मित्र राजेन्द्र अरूण के सहयोग से मेरे लेख, दैनिक हिन्दुस्तान, वीर अर्जुन, सार्वदेशिक, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, आर्यमित्र, गांडीव एवं पांचजन्य में प्रकाशित होने लगे थे। इसके अतिरक्त भारत के विदेश मंत्रालय के हिन्दी अधिकारी, बच्चू प्रसाद सिन्हा से प्रेरणा और सहयोग पाकर मेरी प्रथम हिन्दी पुस्तक – 'मॉरिशस की लोक कथाएँ' का प्रकाशन १९७४ में राजपाल एण्ड संस द्वारा संभव हो पाया था।

यह पुस्तक मैंने बी.ए. की पढ़ाई करते समय लिखी थी। किन्तु इसके प्रकाशित होते ही लेखक के रूप में मेरी प्रसिद्धि स्थापित हो गई थी, क्योंकि भारत के यशपाल जैन, कौटिल्या उदियानी, गिरिराज किशोर और मॉरिशस के मुनीश्वरलाल चिंतामणि, सोमदत्त बखोरी और राजेन्द्र अरूण आदि ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। यही नहीं १९७५-७६ में उत्तर प्रदेश की सरकार के शिक्षा विभाग से इसी पुस्तक पर मुझे 'साहित्यिक विविधा पुरस्कार' के साथ-साथ एक हज़ार रुपये भी प्राप्त हुए थे। और १९७९ (उनासी) में जर्मनी की विदुषी महिला, डॉ० मरगोत गातलाफ़ ने जर्मन भाषा में 'मॉरिशस की लोक कथाएँ' का अनुवाद करके मुझे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का लेखक बना दिया । इसके अलावा मेरे तीन वर्षों के दिल्ली प्रवास के समय से मेरा घनिष्ठ संबंध निम्नलिखित विद्वानों के साथ बन गया था, जिनमें थे सर्वश्री राजेन्द्र यादव, यशपाल जैन, गिरिराज किशोर, मनोहर श्याम जोशी, क्षितिश वेदालंकार, हिमांशु जोशी, ओमप्रकाश त्यागी और वैद्यनाथ शास्त्री आदि । आगे चलकर जैनेन्द्र कुमार, प्रभाकर माचवे और विष्णु प्रभाकर के साथ भी मेरा घनिष्ठ संबंध बन गया था।

नई दिल्ली से बी.ए. करके लौटा तो मॉरिशस के सबसे प्रतिष्ठित विद्यालय 'रायल कालेज, क्यूरपीप में हिन्दी का शिक्षाधिकारी बना और छात्रों को हिन्दी पढ़ाने लगा । यह विद्यालय सदियों से पाश्चात्य संस्कृति का गढ़ बन गया था। यहाँ अंग्रेज़ी, फ्रेंच, ग्रीक, लैटिन के अलावा कुछ पढ़ाई नहीं जाती थी। वह भी फ्रेंच और अंग्रेजी माध्यम से यहाँ क्रियोली अथवा भारतीय भाषाओं का प्रयोग वर्जित था। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में मैंने इस विद्यालय में हिन्दी का प्रवेश करवाया था। यह ऐतिहासिक इसलिए था, क्योंकि जब मैं शुद्ध हिन्दी का प्रयोग कक्षाओं में करता था तब अध्यापक और छात्रगण बाहर खड़े होकर मुझे सुना करते थे। शुरू में हिन्दी अध्यापकों को बुरी नज़र से देखा जाता था। यह इसलिए कि आगे चलकर, हिन्दी ने उस विद्यालय से ग्रीक और लेटिन को विस्थापित किया था। और यदि हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी और फ्रेंच में मेरी योग्यता नहीं होती तो मैं उस विद्यालय में टिक नहीं पाता। किन्तु सतत अध्ययन, अध्यापन और लेखन के बल पर मैंने रॉयल कालेज में २३ वर्षों तक अध्यापन किया और १९९७ में जब मैंने अवकाश ग्रहण किया, तब मेरे प्रकाशित ग्रन्थों की संख्या ३० थी।.....

अपने वक्तव्य को विश्राम देने से पहले, यह बताना उचित होगा कि १९९९ में मेरे तीन ग्रंथों का एक साथ लोकार्पण साहित्य अकादमी में और २००८ में इसी सभागार में मेरे ऊपर लिखी गई पुस्तक 'पहलाद रामशरण, इतिहासवेता और साहित्य मर्मज्ञ' का लोकार्पण, हिन्दी के भागीरथ विद्वानों के मध्य में सम्पन्न हुआ था। मॉरिशस के ऐसे प्रतिकूल वातावरण में जहाँ आज भी छह दैनिक, छह साप्ताहिक फ्रेंच में निकल रहे हैं और जहाँ हिन्दी का न कोई दैनिक, न साप्ताहिक निकल पा रहे हों, वहाँ की मेरी हिन्दी सेवा को ध्यान में रखकर हिन्दी भवन और उनके अधिकारियों ने इस चिरस्मरणीय समारोह में मुझे 'हिन्दी रत्न सम्मान' देकर, मेरे कंधों पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व और बढ़ा दिया है।

आप सब ने मेरे वक्तव्य को ध्यान से श्रवण किया, इसके लिए आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद।

कहानी

जिज्ञासा

लीलामणी करीमन, एम.ए., वाचस्पति

ऋजु १२ साल का हो चुका है। माता-पिता को दिवाली त्योहार की विशेष तैयारियाँ करते हुए देखकर उसके मन में इसके बारे में अधिक जानने की इच्छा जागरित हुई ।

आँगन की सफ़ाई में ऋजु पिता का हाथ बटा रहा है। उसने पिता से पूछा – "पिता जी ! हम दिवाली क्यों मनाते हैं ?"

बेटे की जिज्ञासा देखकर पिता ने प्रसन्नतापूर्वक समझाना आरम्भ किया – बेटे ! दिवाली मनाने के अनेक कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। साल भर के बारह अमावस्याओं में से यह सबसे अधिक अन्धकारमयी रात्रि की अमावस्या होती है। लोग करोड़ों दीप जलाकर इस घनघोर-अन्धकारमयी रात्रि को पूर्णिमा की रात के रूप में बदल देते हैं। रोशनी करके हम दिवाली मनानेवाले ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार रात के अन्धेरे को हरने के लिए हम दीपक जला रहे हैं; उसी प्रकार हमारे अन्दर में जो असत्य-अज्ञान का अन्धकार है, वह सत्य के ज्ञान से दूर हो जाए; और फिर हम सत्य को अपनाकर अच्छे कर्मों में लगे रहें – **असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय ।**

ऋजु को दिवाली के संबंध में आगे बताते हुए, उसके पिता जी कहते हैं – "बेटे ! जब कोई त्योहार आता है, तब वह कोई-न-कोई सन्देश लेकर आता है । दिवाली के अवसर पर मिठाइयाँ बाँटने की प्रथा है । अतः परिवार, समाज तथा आस-पास के बीच मिठाइयाँ बाँटकर हम उनके प्रति प्रेम और एकता का हाथ बढ़ाते हैं। इस दिन यदि हमारे अन्दर किसी के प्रति शत्रुता की भावना है तो हम उसे भुलाकर उससे प्रेम के साथ मिलते हैं। मिठाई देकर उसके प्रति प्रेम का व्यवहार करने का संकल्प लेते हैं ।"

ऋजु – "पिता जी, आज मैं भी अपने मित्रों को मिठाई देने जाऊँगा ।"

पिता जी – "अवश्य जाना बेटे । उन सभी को प्रेम मिठाई खिलाना ।"

ऋजु - "पिता जी, दिवाली के साथ राम की कथा भी जुड़ी हुई है न !"

पिता जी – "तुमने सही कहा बेटे ! हर त्योहार के साथ किसी-न-किसी महापुरुष के जीवन की कोई घटना जुड़ी होती है, ताकि हम उस महापुरुष को याद करके उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करते रहें ।"

यद्यपि श्रीराम दीपावली के अवसर पर अयोध्या नहीं लौटे थे, तथापि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का नाम दीपावली से जोड़ दिया गया है । जिस दिन श्री राम, लक्ष्मण और सीता माता १४ वर्ष वनवास के बाद अयोध्या लौटे, उस दिन उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने अयोध्या नगर की गली-गली में दीपों की आवलियाँ सजाकर श्री राम के आने के मार्गों को प्रकाशित किया था। अब हर वर्ष दिवाली की रात को जनता इस घटना को जब याद करते हैं, तब उनके सामने रामायण की कथा आ जाती है; और फिर उनके गुणों को अपनाने की कोशिश करते हैं।

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दिवाली की रात को स्वेच्छापूर्वक अपने प्राण त्यागे; और हम हर साल दिवाली की रात को 'ऋषि-निर्वाण' मनाते हैं। उनके बताए मार्ग पर विचार करते हैं । उन्होंने हमें सत्य का मार्ग-दर्शाया है। सत्य का मार्ग वेद-मार्ग है। वेद-मार्ग पर चलकर हम अच्छे मानव बन सकते हैं। अच्छा मानव बनने के लिए हमें वेद का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वेद के ज्ञान से हम परोपकारी, सदाचारी, पराक्रमी, पुरुषार्थी, धार्मिक और साद्विक विचार वाले बनेंगे । हमारे अन्दर दूसरों के प्रति अच्छी-अच्छी भावनाएँ विद्यमान होंगी । हमारे बहुत सारे मित्र होंगी। लोग हमारे व्यवहार से, हमारे आचरण से प्रसन्न होंगे ।

ऋजु – *'पिता जी, मैं भी सत्य के मार्ग को अपनाऊँगा, वेद का ज्ञान प्राप्त करूँगा, महर्षि दयानन्द की तरह समाज की सेवा करूँगा, राम की तरह आज्ञाकारी पुत्र बनूँगा ।'*

प्रकाश का प्रतीक : दीपावली

पंडिता अन्जनी महिपत, वाचस्पति

ओ३म् ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधुं प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः
दधाति रत्नं स्वद्ययोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रियोरसः ।।

यह मन्त्र ऋग्वेद के नौवें मंडल के छियासीवें सूक्त का दसवाँ मन्त्र है ।

शब्दार्थ – वह परमात्मा **यज्ञस्य** – यज्ञ की, **ज्योतिः** - ज्योति है, **मधुं** - वह आनन्द स्वरूप है, **प्रियं पवते** - जो उससे प्रेम करते हैं, वह उन्हें पवित्र करता है, **देवानां** - लोक-लाकान्तरों का, **पिता** - पालन करनेवाला, **जनिता** - उत्पन्न करनेवाली माता है, वह परमात्मा **विभूवसुः** – अत्यन्त ऐश्वर्य वाला है, **दधाति** - धारण करता है, **स्वधयोरचीच्यं** - **द्यावा** - पृथ्वी के अन्तर्गत, **रत्नं** - रत्नों को, **मदिन्तमः** - वह आनन्दस्वरूप है। **मत्सर** - सबको आनन्द देनेवाला और **इन्द्रियः** - ऐश्वर्ययुक्त है, **रसः** - आनन्दस्वरूप है।

भावार्थ – *वह परमात्मा यज्ञ की ज्योति है । वह सृष्टि और रत्नों को धारण करनेवाला ऐश्वर्ययुक्त है। वह आनन्दस्वरूप विधाता और निर्माता है।*

हिन्दू-परिवार अपना उत्साह और उमंग व्यक्त करने के लिए विभिन्न पर्व मनाते हैं। इन पर्वों में दीपावली सर्वप्रिय, महान् और पावन है। दीपावली प्रकाश का पर्व है। प्रकाश सब जीवों को प्रिय है। दीपावली कार्तिक अमावस्या को बड़े भव्य रूप से और राष्ट्रीय स्तर पर मनाई जाती है। कहा जाता है कि दीपावलीवाला कार्तिक अमावस्या का अन्धकार सबसे घना होता है । अतः दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है।

हिन्दू-समुदाय परंपरा के अनुसार दीपावली में छोटे-छोटे दीपों को आवलियों में सजाकर प्रज्वलित करते हैं और बिजली के रंगीन बल्बों से घर-आँगन सजाते हैं। जिस प्रकार जगमगाते सितारों से नील-गगन सुशोभित होता है, उसी प्रकार जगमगाते दीपों और बिजली के रंगीन बल्बों से घर-आँगन और यह धरा सूसजित और सुशोभित हो उठती है। आँखों को चौंधिया देनेवाली दीपों की ज्योति और रंगीन बल्बों की ज्योति तो बाहर की ज्योति है, जो चंद घण्टों के लिए पर्व मनानेवाले लोगों को आनन्द और उमंग प्रदान करती है। यह सही है, परन्तु वास्तव में सच्चा आनन्द तो अन्दर की पवित्रता और प्रकाश से प्राप्त होता है । जिस प्रकार सफ़ाई करके घर-आँगन और गली को पवित्र करते हैं, उसी प्रकार प्रेम-जल से हम मन का मैल धोकर उसे पवित्र करें और भेद-भाव को भूलकर हित-मित्र और पड़ोसियों को मिठाई का आदान-प्रदान कर प्रेम का विस्तार करें और सच्चा सुख प्राप्त करें। प्रेम भी प्रकाश है और मिठाई मिठास का प्रतीक है। इस प्रेम-प्रसार की प्रक्रिया में हम परमात्मा को न भूलें। मन्त्र कहता है – **पवते प्रियं** – अर्थात् जो परमात्मा से प्रेम करते हैं, परमात्मा उन्हें पवित्र करता है। वास्तव में परमात्मा का प्रेम ही पावन और शाश्वत होता है ।

मानव जीवन में बाह्य और आन्तरिक प्रकाश अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रकाश जीवन है। प्रकाश के बिना जीवन धारण नहीं किया जा सकता । नील-गगन में कभी न बुझनेवाला सूर्यरूप विशाल दीपक का अनुपम प्रकाश हमें जीवन प्रदान करता है। प्रातःकाल उदय होते ही सूर्य की किरणें समस्त जीवों में प्राण फूँक देती हैं। सूर्य का प्रकाश परमात्मा-प्रदत्त अनोखा वरदान है। ईश ने सूर्य के प्रकाश के साथ-साथ रात्रि का अन्धकार भी उत्पन्न किया है, जिससे सृष्टि का सन्तुलन बना रहे रात्रि का अंधकार उतना भयानक नहीं होता, जितना असत्य, अविद्या, अज्ञान और अन्धविश्वास का अन्धकार इस दुखदायी अन्धकार ने मनुष्य को अपनी लपेट में जकड़ रखा है । इस अन्धकार के कारण मन में काम-क्रोध, मोह, लोभ अहंकार, ईर्ष्या, छल-कपटरूपी महानुभाव छिपे हैं। मन के इस अन्धकार को दूर कर कैसे उन महाशत्रुओं का दमन किया जाय ? उत्तर मिलता है कि सत्य के प्रकाश से । मनु महाराज का कथन है कि **मनः सत्येन शुद्धयति** – अर्थात् सत्य से मन शुद्ध होता है। परमात्मा सत्यस्वरूप है । मन में परमात्मारूप सत्य के प्रकाश से मन का अन्धकार दूर होगा और सत्य के प्रखर प्रकाश से ही उन महाशत्रुओं का दमन होगा ।

परमात्मा ने हमारे अन्तःकरण में सबसे अच्छी और महत्वपूर्ण चीज़ बुद्धि दी है । बुद्धि पर जब अज्ञान का अन्धकार छाया रहता है, तब कोई भी कार्य ढंग से नहीं होता। बुद्धि हमारे शरीररूपी रथ का कुशल सारथि है । बुद्धि पर छाये अज्ञान का अन्धकार ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है। मनु महाराज का कथन है कि बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति – अर्थात् बुद्धि ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर शुद्ध होती है ।

सत्य-ज्ञान का प्रकाश ही सर्वोत्तम प्रकाश है । सत्य-ज्ञान के प्रकाश से ही बुद्धि प्रखर और तेज होती है। उस प्रभु ने वरदान-स्वरूप वेद के सत्यज्ञान का प्रकाश प्रदान किया है । उस सत्यज्ञान को अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार पुण्यात्मा ऋषियों ने मानव तक पहुँचाया । इस आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परमात्मा-प्रदत्त वेद के सत्यज्ञान का प्रकाश फैलाने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, और सौभाग्य से दीपावली के अवसर पर दीपों के प्रकाश में उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ । अन्य ज्ञानी और वेद-विद् गण उपदेशक के

रूप में भटके हुए मनुष्यों को अपनी वाणी के प्रकाश से वेद-ज्ञान के प्रकाश से सही दिशा में मार्ग-दर्शन कर रहे हैं।

मन पर असत्य और बुद्धि पर अज्ञान का अन्धकार आच्छादित होने से मन और बुद्धि मलिन हो जाती है, तब आत्मा रूपी दर्पण पर उस मलिनता की धूल को वह पैठ जाती है। उस आत्मा रूपी दर्पण की धूल को कैसे हटाया जाय ? मन्त्र कहता है कि **'ज्योतिर्यज्ञस्य'** – अर्थात् परमात्मा यज्ञ की ज्योति है। जब यज्ञकर्ता श्रद्धा-भक्ति से परमात्मा रूप यज्ञ की ज्योति को नित्य यज्ञ करके धारण करता है, तब उसकी आत्मारूपी दर्पण उस ज्योति से परिष्कृत और चमत्कृत हो उठता है। श्रद्धा-भक्ति उस प्रिय प्रभु के प्रति अनुराग की भावना है । अतः भक्त-गण की आत्मा श्रद्धा-भक्ति के प्रकाश से प्रकाशित और शुद्र होती है। योगी-गण जब योग-साधना में लीन होकर योग के अन्तिम सोपान समाधि तक पहुँचते हैं, तब **योगश्चितवृत्तिनिरोधः** – अर्थात् योग से योगी की चित्त-वृत्तियों का निरोध हो जाता है और आत्म-ज्ञान के प्रकाश से उनकी आत्मा प्रकाशित होकर अपने स्वरूप में आ जाती है । आत्मा समस्त दुखों से मुक्त होकर अमृत-सुख प्राप्त कर लेती है। मनु महाराज का कथन है कि **विद्या वपोभ्यां भूतात्मा** – अर्थात् विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होती है। विद्या के प्रकाश से आत्मा शुद्ध होकर चमकती है।

दीपावली प्रकाश का प्रतीक है। प्रकाश का पर्व है । दीपक और बिजली के बल्बों की बाहरी ज्योति जगाने में दीपावली की सार्थकता नहीं है । बाह्य प्रकाश के साथ-साथ मन में प्रेम, सत्य की, बुद्धि में ज्ञान की और आत्मा में यज्ञ, तप, विद्या और श्रद्धा-भक्ति की ज्योति जगाने में दीपावली सार्थक सिद्ध होती है । दीपावली हमें यह शुभ संदेश देती है ।

महर्षि दयानन्द के वेद-भाष्य

पंडित धर्मेन्द्र रिकाय, आर्य भूषण

जहाँ तक वेद भाष्य का सम्बन्ध है, महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य नहीं कर सके थे। सामवेद और अथर्ववेद का भाष्य वे कर ही नहीं सके और ऋग्वेद का भी सम्पूर्ण भाष्य उनके द्वारा नहीं किया जा सका । चार वैदिक संहिताओं में केवल यजुर्वेद का वे भाष्य पूरा कर सके थे। ऋग्वेद में १० मण्डल और १०,५५२ मन्त्र हैं, जिनमें महर्षि जी सप्तम मण्डल के बासठवें सूक्त के द्वितीय मन्त्र तक का ही भाष्य कर पाये थे। ऋग्वेद के १०,५५२ मन्त्रों में से केवल ५,६४९ मन्त्रों का ही महर्षि जी ने भाष्य किया । ऋग्वेद भाष्य सन् १८७८ के मध्य में मासिक रूप से मुद्रित होकर प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गया था, और स्वामी जी के जीवन काल में उसके केवल ५१ अंक ही प्रकाशित हुए थे। शेष भाष्य बाद में मासिक रूप से छपता रहा । यजुर्वेद भाष्य का मुद्रण भी ऋग्वेद के भाष्य के साथ-साथ ही मासिक अंकों के रूप में प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गया था। वह कुल ११७ अंकों में छपा और उसका मुद्रण १८८९ इस्वी में पूरा हुआ । यजुर्वेद भाष्य भी स्वामी जी के जीवन काल में पूरा नहीं छप सका था।

स्वामी जी ने ऋग्वेद भाष्य भूमिका की रचना १८ अगस्त, १८७६ को तब प्रारम्भ की थी, जब कि वे अयोध्या में निवास कर रहे थे। तीन मास के लगभग समय में उन्होंने यह अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखकर समाप्त कर दिया था, जो उनकी असाधारणता का प्रतीक था, विद्वत्ता तथा कार्य-क्षमता के कारण ही यह सम्भव हुआ था। अनेक नगरों में घूमते हुए, उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के कार्य को जारी रखा। १८७७ के प्रारम्भ में इस ग्रन्थ को मुद्रण के लिए लाजरस प्रेस काशी में भेज दिया गया, जहाँ उसके चौदह अंक प्रकाशित हुए । शेष दो अंक बम्बई के निर्णय सागर प्रेस द्वारा छापे गए । 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में है । स्वामी जी ने स्वयं उसका संस्कृत भाग लिखा। उसका हिन्दी भाग पंडितों द्वारा संस्कृत से अनुवाद के रूप में लिखा गया ।

वेदों के भाष्य के सम्बन्ध में स्वामी जी ने जो कार्य किया, ऐतिहासिक दृष्टि से उसका बहुत अधिक महत्व है। वेदों के अर्थ को जन साधारण की भाषा में प्रकट करना एक क्रान्तिकारी पत्र था। अब तक यह समझा जाता था, कि वेद पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही है। शूद्रों के लिए तो उनका सुनना तक भी मना था। पर स्वामी जी ने यह प्रतिपादित किया, कि मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने यजुर्वेद का यह मन्त्र प्रस्तुत किया – **यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।**
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।

इस मन्त्र का विशद् रूप से अर्थ कर स्वामी जी ने अपने मन्तव्य को इस प्रकार प्रकट किया – *"क्या परमेश्वर शूद्रों का भला नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों को पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे ? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं, वैसे ही उन्होंने वेद भी सब के लिए प्रकाशित किये हैं।"*

पर सब के लिए वेदों को पढ़ सकना तभी सम्भव हो सकता है, जब कि वे जन-साधारण की भाषा या भाषाओं में भी प्राप्त हों । स्वामी जी प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने इसके लिए प्रयत्न किया । उनसे पूर्व किसी भी भारतीय विद्वान् ने हिन्दी, गुजराती, बंगला आदि भारतीय भाषाओं में वेदों का अनुवाद नहीं किया था। इस कारण संस्कृत न जानने वाले सर्वसाधारण लोगों के लिए तो वेदों को पढ़कर समझना सम्भव नहीं था।

शिक्षा-प्रचारक महर्षि दयानन्द

पण्डिता विद्वन्ती जहाल, वेद-पाठी

आर्यसमाज के संस्थापक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव जिन विषम परिस्थितियों में हुआ था, उस समय देश अंग्रेज़ों की क्रूर-कूटनीति का शिकार बना हुआ, दासता के गहरे गर्त में पड़ा, निराशा के भँवरों में डूबा जा रहा था । स्वकीय उत्कर्ष की संस्कृति एवं सभ्यता से दूर बहाया जाकर, लार्ड मैकोले की घातक शिक्षा नीति के चंगुल में फँसा परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ, निरीह पशुओं की भाँति मूक रूदन कर रहा था।

भारत की जनता अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को सर्वथा विस्मृत कर पाश्चात्य सभ्यता एवं शिक्षा को ही चरम लक्ष्य मानकर भारतीयता से दूर होती जा रही थी। वेदादि षट्-शास्त्रों को हेय दृष्टि से त्याज्य मान भूली थी और अंग्रेजों की कुटनीति के दासत्व जाल में उलझती जाकर अहोभाग्य मान रही थी। महर्षि ने सच्चे गुरु, प्रज्ञा चक्षु, दण्डी स्वामी विरजानन्द महाराज जी के श्री चरणों में बैठकर स्वकीय ज्ञान, सूर्य को वैदिक रश्मियों से सुसज्जित कर देश को झकझोड़ कर जागृत किया कि – हे भोले भारतवासियो ! तुम किस गर्त में गिरने जा रहे हो, अपने आपको पहचानो, और दासता की बेड़ियों को तोड़ फेंको। अपनी भाषा और वेश-भूषा के महत्व को स्मरण करो, अपने अतीत के गौरवपूर्ण इतिहास को आदर्श मानो। देखो कि ये किस प्रकार से तुम्हारी अविद्यामयी दुर्दशा का लाभ उठाकर तुम्हें देश के गौरव, संस्कृति, सभ्यता तथा भारतीयों से दूर बहाए ले जा रहे हैं। तुम्हारे धर्म को असभ्यता का मूर्तिमान परिचायक प्रदर्शित कर तुम्हें विधर्मी बना रहे हैं। यदि यह क्रम चलता रहा और तुम सोते रहे तो निश्चयतः एक न एक दिन भारतवर्ष से आर्यों का नाम मिट जाएगा । ऋषियों की यह भूमि अपने पूर्वजों के नाम तक को विस्मृत कर बैठेगी ।

आज हमारे देश को भी ऐसा ही खतरा है। लोग ज़ोर-शोर से विधर्मी बन रहे हैं। इसका कारण है, लोगों की अज्ञानता, अविद्या और लालचपन ।

महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के तृतीय समुल्लास में शिक्षा-प्रणाली विषय में सह-शिक्षा (co-education) का विरोध किया है। महर्षि दयानन्द की शिक्षा-विधि के मूल तत्व और वस्तुतः शिक्षा के आधार-स्तम्भ पर अभी तक सभ्य संसार में यथोश्चित बल नहीं दिया गया है। महर्षि की शिक्षा प्रणाली यह थी कि लड़की के लिए व्यवस्था अलग हो।

महर्षि ने कहा – *"घर के परिवार में एक भी बच्चा अशिक्षित न रहे, अपितु जिस परिवार में बच्चे को पाठशाला न भेजा जाय, उस परिवार को दण्ड दिया जाए ।"*

आज हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हमारे इस छोटे से देश में महर्षि दयानन्द का यह आदेश लागू है। नारी भी शिक्षित एवं उच्च शिक्षा पाकर बड़ी-से-बड़ी ज़िम्मेदारी सम्भालते हुए पुरुषों के साथ कँधे-से-कन्धा मिलाकर उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ रही हैं। आज देश में शिक्षा-सुविधा भरपूर है। विदेश जाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन खेद की बात यह है कि इतने शिक्षित होते हुए भी हमारे लोग विधर्मी बन रहे हैं। क्या परमात्मा ने स्वजाति में जन्म देकर गलती की ? उन धर्मों के लोगों का खून अलग है? वैदिक धर्म से शुद्ध और पवित्र कौन-सा धर्म है? यहाँ तक हमारे जवान जो हमारे उज्ज्वल भविष्य के सैनिक हैं, परिवार और समाज की मज़बूत नींव हैं, मेरूदण्ड हैं, नशाखोरी शराब, क़द्धद्वढ़द्म की बुरी लत में जकड़े जा रहे हैं। इस दलदल में इतने फंस चुके हैं, जहाँ से निकलना कठिन है, पर असम्भव नहीं । आर्यसभा की अनेक संस्थाएँ हैं, जहाँ पर ऐसे लोगों को सेवा प्रदान की जाती है ।

नशाखोरी तथा शराब की बेहोशी में वे माँ-बहनों की पहचान नहीं कर पा रहे हैं। हमारी माँ-बहनें जिनको नारी-शक्ति, मातृशक्ति से सम्बोधन किया जाता है – वे लोग बुरी निगाहों से बची नहीं हैं। बलात्कार का शिकार, बेरहमी से उनका कत्ल किया जा रहा है। क्या यही है शिक्षा का आधार ?

आज स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटी से प्राप्त हुई शिक्षा को ही लोग सत्यविद्या मान बैठे हैं। सत्यविद्या हमें आध्यात्मिकता की ओर ले जाने वाली होती है। हमें सही दिशा का निर्देश देते हुए, हमें मानवता का पाठ पढ़ाती है, जिससे हम गलत और सही को परखकर कर्म करने में सक्षम होते हैं।

हे दयानन्द के सपूतो ! हम दीपावली पर्व के साथ ऋषि-निर्वाण भी मनाते हैं। दीपावली का सन्देश यह है कि लोगों को अज्ञान-अन्धकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में हम आएँ । निर्वाण का सन्देश है कि यह दुनिया मृत्युलोक है। साधारण मनुष्य को मृत्यु प्राप्त होती है। असाधारण लोग महान् आत्मा वाले हैं, उनको निर्वाण प्राप्त होता है। हमें महर्षि के निर्वाण पर शोक नहीं करनी चाहिए। **तत्र को मोह कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ।** महान्, असाधारण लोगों के लिए न मोह, न शोक, बल्कि उनके कहे गए वचनों का पालन करना, उसको कर्म में परिणत करना है। उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हुए आगे बढ़ना है।

महर्षि ने देश की प्रमुख एवं भूली-भटकी जनता को केवल जागरित ही नहीं किया, अपितु व्यक्तिगत एवं समष्टिगत रूप में जन-जीवन की प्रत्येक दशा में योग्य वेदोक्त उत्कर्षपूर्ण भारतीय सभ्यता व संस्कृति का मूल मन्त्र पढ़ाकर आर्यसमाज के संगठन के रूप में दीक्षित कर संगठित कर दिया ।

भद्र विचार तेल भर उसमें, दिल दीपक वर प्यारा।
बाती वैदिक ज्ञान युक्त सज, तब हो अमिट उजारा ।
जला गये ऋषि, दीप मालिका, दीपक वही संजोले ।
अनायास तम मिटे तुम्हारा, क्यों भव दुख में डोले।
ऐसी साधन नेक सजाले ।
दिल का ऐसे दीप जलाले ।

महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा

पं० विरजानन्द उमा, एम.ए.

महर्षि दयानन्द एक युगपुरुष थे। सत्य, विद्या, योग, तप, ईश्वरभक्ति, देशभक्ति, प्रेम, सेवा धर्म और दर्शन की दृष्टि से वे किसी से कम न थे। व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सार्वभौम उन्नति के लिए जिस व्यक्ति ने अपना जीवन बलि देवी पर चढ़ा दिया, वह है, 'ऋषि दयानन्द' । स्वामी दयानन्द कहने से वेद याद आती है और वेद का नाम लेने से 'आर्यसमाज' मन में तुरन्त आता है ।

अतः कहा जा सकता है कि दयानन्द का विचार वेद विचार है। दयानन्द की शैली प्रगति की शैली है और दयानन्द की विचारधारा मनुष्य के सर्वांगिक विकास की धारा है । स्वामी जी केवल शैक्षणिक अर्थ में दार्शनिक नहीं थे । अपितु उन्होंने दर्शन को अपने व्यवहारों में जिया। युग-पुरुष कहें – मानव-उद्धारक कहें या समाज-सुधारक कहें, चारों ओर आपकी छवि बराबर है। आप की शिक्षा, आपका दर्शन वास्तविक जीवन की मूल, गंभीर समस्याओं पर आधारित था। आप के जीवन के सत्य, निष्पक्ष एवं यथार्थ सिद्धान्त को दर्शाने वाले थे। सत्य की खोज और उसकी अभिव्यक्ति करना आप जीवन का लक्ष्य था – सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में आपने अनेक बार 'सत्य' लिखा (लगभग ३२ बार) सत्य शब्द पर बल दिया है। आपका मुख्य उद्देश्य था – सत्य और असत्य पर प्रकाश डालना -- वेद शब्द की व्युत्पत्ति भी ज्ञान, लाभ और प्रकाश से होती है । अतः अगर स्वामी जी की वैदिक विचारधारा पर ज़्यादा खोज करना है, तो आपके प्रत्येक ग्रन्थ में स्थूल और सूक्ष्म रूप में वह विचारधारा पायी जाती है । स्वामी जी के अनुसार जीवन की कर्मचेष्टाओं को सत्य से ओत-प्रोत करना चाहिए । आज मानव धन की खोज में इधर-उधर भटक रहा है। ऋषि याज्ञवल्क्य से उनकी पत्नी मैत्रेयी पूछती हैं – 'हे ऋषिवर ! यदि सम्पूर्ण पृथ्वी की सम्पत्ति इसी समय मेरी हो जाए तो क्या मैं उससे अमर हो जाऊँगी ? यदि नहीं तो उसे लेकर मैं क्या करूँगी ! इसी ओज से युक्त नचिकेता मृत्यु के आचार्य यम से कहता है –

न वित्तेन तर्पणीयों मनुष्यो लप्स्यामेह वित्तमद्राक्ष्म चेत्वा ।
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स स्व ।। *कठोपनिषद् १-२७*

अर्थात् मनुष्य धन से तृप्त नहीं हो सकता, यदि हमने तेरे रहस्य को समझ लिया तो धन-धान्य सब प्राप्त हो जाएगा, जितना तू चाहेगा उतना ही तो जी सकूँगा । अतः मैं तो यहीं वर माँगता हूँ कि ब्रह्म मुझे मिल जाए ।

स्वामी जी का यही दर्शन है, यही जीवन-दर्शन है । वैदिक विचारधारा के अनुसार – सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहत्ते तस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे । अर्थात् सब जीव उसी महान् चक्र में जीते हैं, स्थित हैं, उसी में इस हंस (जीवात्मा) को कोई घुमा रहा है, अपने को इस चक्र में प्यार, प्रीति, सत्य, अहिंसा द्वारा अमृतत्व की प्राप्ति का प्रयास करना है। स्वामी जी की विचारधारा यौगिक भी है । आपके अनुसार आचार-संहिता व्यक्ति के लिए है, वही समाज के लिए है और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भी है। समाज के प्रत्येक नेता, राष्ट्र के अध्यक्ष प्रत्येक परिवार के मुखिया, संस्था के प्रधान को ईश्वर के गुण, सम्भवी मात्रा में अपने आचरण में ढालने का प्रयत्न करना चाहिए ।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तथा श्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति – अर्थात् पृथ्वी एवं हमारी मातृ भूमि को धारण करने वाले छः गुण हैं :–

१. बृहद् सत्य अर्थात् पूर्ण सत्य - मन, वचन और कर्म से ।
२. उग्र ऋत् अर्थात् मानव के अधिकार एवं कर्त्तव्य सम्बन्धी दृढ़ एवं शाश्वत नियम, घर, समाज एवं देश में।
३. दीक्षा अर्थात् जीवन दान, अन्न देकर, धन देकर, मन देकर या जीवन देकर ।
४. तप, अर्थात् सत्यार्थ कष्ट-सहन – सत्य के लिए परिवार, सम्बन्धी एवं राष्ट्र में जागृति लाना है। आज लड़ाई, झगड़ा, फ़साद, चोरी आदि सत्य की कमी के कारण है। तप ही जीवन को स्वर्ण एवं स्वर्ग बनाता है। तप की रीति-नीति न्यारी है, करो तो स्वर्ग सुख नहीं तो नरक-दुख ।
५. ब्रह्म अर्थात् ज्ञानानुराग – जो ज्ञान की प्राप्ति में आलस्य नहीं करता और सत्य ज्ञान के द्वारा परमात्मा को मानता है, पहचानता है और उसके अनुसार चलता है ।

६. यज्ञ अर्थात् सार्वजनिक हिताय, निःस्वार्थ कर्म करना । यज्ञ जो पञ्चमहायज्ञ से जाना जाता है – पंचमहायज्ञ सन्ध्या, हवन, पितृयज्ञ, अतिथि और बलिवैश्वदेव यज्ञ । अर्थात् सन्ध्या द्वारा अपने को जानना, अपने अन्दर की वृत्तियों को शुद्ध एवं पवित्र करना । अग्निहोत्र या हवन द्वारा वातावरण की शुद्धि करना। पितृ यज्ञ द्वारा जीवित माता-पिता, आचार्य गुरुजनों की यथायोग्य सेवा करना । अतिथि यज्ञ द्वारा स्वामी, साधु, मुनि और अतिथियों को सम्मान देना, व्याख्यान सुनना और उसको अपने जीवन में धारण करना। अंत में जानवरों की भी सेवा करना । स्वामी जी की विचारधाराओं में मुख्यतः यज्ञ का प्रचार-प्रसार एवं प्रवर्द्धन करना है ।

स्वामी जी की वैदिक विचारधारा उनके प्रत्येक पुस्तकों की भूमिका को पढ़ते हुए परिज्ञान होता है। उदाहरण के लिए गोकरूणानिधि में स्वामी जी लिखते हैं – *"वे धर्मात्मा विद्वान् लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चल के सब संसार को सुख पहुँचाते हैं; और शोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिए वर्तमान हैं। पूजनीय जन वे हैं, जो अपनी हानि होनी हो तो भी सबके हित के करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं, और तिरस्कार करने योग्य वे हैं, जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते हैं।"*

स्वामी जी ने वैदिक सिद्धान्तों को आर्ष-ग्रन्थों से प्रमाणित मानते हुए किसी भी वेद-विरुद्ध मान्यता को स्वीकार नहीं किया – यहाँ तक कि पशु-रक्षा पर बहुत ध्यान दिया और उन्हें बचाने का प्रयत्न करते रहे। यह अभियान आज भी चलाना है। पशु की रक्षा करना भी मनुष्यों का कर्त्तव्य है और वातावरण की शुद्धि इस से सम्भव है। वैदिक संस्कृति को उभारना ही स्वामी जी का लक्ष्य था और उनके विचारों के आधार पर वैदिक संस्कृति की उदात्त भावनाओं को उजागर किया गया। हमारी संस्कृति विश्व के मानव-मात्र ही नहीं अपितु जीव मात्र की भलाई की प्रेरणा देती है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग् भवेत् ।।

यही हमारी आस्तिकता की भावना है । अतः स्वामी जी ने वेद की व्याख्या द्वारा अपने विचारों को प्रकट किया – जैसे ईशोपनिषद् में कहा गया है – **ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।**

जब हम यह जान लेते हैं कि सृष्टि के कण-कण में परमपिता का वास है, कोई वस्तु उससे रिक्त नहीं है, तथा वही समस्त पदार्थों का स्वामी है, तब हम जगत् में अलग-अलग रहते हुए लालच का परित्याग कर उसका त्यागपूर्वक उपभोग करना सीख जाते हैं और यही भावना एक स्वस्थ समाज की आधारशिला है । इसी विचारधारा को पुरुषोत्तम राम ने अपनाया था, कृष्ण जी महाराज ने अपनाया था, आचार्य चाणक्य ने भारत निर्माण की प्रतिज्ञा की।

स्वाहा और इदं न मम का पाठ सिखाने आये थे । स्वामी जी ने अपनी विचारधारा द्वारा वैदिक विचारधारा को आर्यसमाज के दस नियमों में परीलक्षित किया ।

पहला नियम – सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। अर्थात् आध्यात्मिक और भौतिक विद्या का मूल परमेश्वर है ।

द्वितीय नियम में परमेश्वर के गुणकर्म और स्वभाव के आधार पर विशेषण या लक्षण बताए गये हैं, जिससे ईश्वर के स्वरूप के विषय में मतभेद न हो और उस परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को जानकर हम उसकी उपासना करें।

स्वामी जी वेद को सर्वोत्तम ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान-सागर मानते हैं और उन्होंने तृतीय नियम में कह रखा – *"वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"*

चौथा - सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।

पाँचवाँ - सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए ।

छठा - संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

सातवाँ - सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथोयोग्य वर्त्तना चाहिए ।

आठवाँ - अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

नौवाँ - प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

दसवाँ - सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

कहा जा सकता है, वैदिक सत्य शास्त्र के आधार पर ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्त वर्णित सत्य सनातन धर्म का जो स्वरूप महर्षि दयानन्द ने प्रतिपादित किया है, उनके मूल में आर्यसमाज के १० नियम हैं, जिन्हें हम स्वामी जी की वैदिक विचारधारा कह सकते हैं।

चलें हम दुरित से भद्रता की ओर

पंडिता सत्यम चमन, एम.एस.के, सिद्धान्त वाचस्पति

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव यद्भद्रं तन्न आसुव।। *यजु ३०/३*

अर्थ **– देव सवितः** - हे प्रेरक देव, **विश्वानि** - सब, **दुरितानि** - बुराइयों को, **परासुव** - दूर कीजिए, **यत्** - जो, **भद्रम्** - कल्याणकारक वस्तु, **तत्** - वह, **नः** - हमारे लिए, **आसुव** - दिलाइये ।

ऋषि दयानन्द ने अपने वेद भाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में इसी मंत्र के द्वारा ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की है ।

इस मंत्र के द्वारा वेद माता ने बताया कि यदि हम सुख चाहते हैं तो हमें अपने जीवन से दुरित को हटाना होगा । हम सभी दुरित से बचना चाहते हैं और भद्रता पाना चाहते हैं। यह कैसे सम्भव होगा ? इस मंत्र के माध्यम् से महर्षि ने समझाया कि हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमें ऐसी शक्ति दें, जिससे हम अपने अंदर का अहंकार, अविद्या, लोभ आदि दुरितों को दूर करने में समर्थ हों।

अविद्या के कारण मनुष्य वह कीड़ा बन जाता है, जिसे केवल छिद्र नज़र आता है, अच्छाई कहीं दिखाई नहीं देती, इसीलिए महर्षि ने बताया कि जब तक हमें सत्यविद्या प्राप्त नहीं होगी तब तक हमारा कल्याण नहीं होगा । दुरितों को दूर करने से ही हमें भद्रता प्राप्त होती है। पाप की भावना समाप्त होने से कल्याण की भावना उत्पन्न हो जाती है। दुरित अंधकार है। इसी के कारण मनुष्य दुख से घिरा रहता है। इससे बचने का उपाय महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लास में बता दिया है। स्वामी जी ने बताया है कि यदि माता-पिता अपनी संतान को जीवन में आगे बढ़ाना चाहते हों तो सबसे पहले उसे अंधविश्वास जैसे घोर अन्धकार से दूर करना होगा। यह अन्धकार विद्या के प्रकाश आने पर ही दूर होगा। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के आठवें नियम में लिखा– *'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'* अज्ञानता के कारण जो अपने धर्म को त्यागकर विधर्मी बन रहा है, उसे इन समुल्लासों से ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होगा। मनुष्य मात्र को अंधविश्वास से निकालने के लिए महर्षि दयानन्द ने इस समुल्लास में तीन गुरुओं की चर्चा की है, माता-पिता और आचार्य। माता का परम कर्तव्य है कि वह अपनी संतान को उत्तम शिक्षा दे, जिससे संतान सभ्य बने, अच्छे बुरे की पहचान कर सके ।

आज इस नवीन युग में जो माताएँ शिक्षित हैं, घर से बाहर नौकरी करने जाती हैं। परन्तु एक तरफ़ लाभ हो रहा है, तो दूसरी तरफ़ हानि । जिस संतान के सुख के कारण माताएँ घर से बाहर नौकरी करने जा रही हैं, उन बच्चों को समय नहीं दे पा रही हैं। खाली समय में अपने आपको अकेला पाकर बच्चे मनमानी करते हुए बुराइयों में पड़ जाते हैं। इन बुराइयों को दूर करने का एकमात्र उपाय है – शिक्षा । यदि सुबह, समय नहीं मिलता तो शाम में परिवार एक साथ संध्या करने बैठे। रात्रि का भोजन साथ करे। माता-पिता को प्रतिदिन अपने बच्चों के साथ कम-से-कम एक घण्टा बिताना चाहिए। उन्हें सत्यज्ञान की पहचान करायें, भूत-प्रेत अज्ञानता से दूर रखें। ईश्वर-भक्ति का महत्व बतायें । यह सिखायें कि जहाँ सत्य ज्ञान है, वहीं प्रकाश है। हरेक माता-पिता का परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दें, जिससे बालक आलस्य, प्रमाद, मादक-द्रव्य-सेवन, हिंसा क्रूरता आदि दोषों से बचें। सत्यभाषण, सत्याचरण, प्रतिज्ञा पालन और समय पालन के महत्व को जानें । अपने से छोटे बराबर वाले तथा बड़ों के प्रति मान-सम्मान रखे।

यदि हम सभी ऋषि दयानन्द के बतायी गयी मानव-निर्माण की शिक्षाओं को अपनायेंगे तो निश्चित हम सभी के जीवन से अविद्या का अन्धकार दूर हो जाएगा और हमारा जीवन ज्ञान के प्रकाश में आ जाएगा।

निर्वाण-दिवस के अवसर पर हम सभी प्रण लें कि विधर्मी बनने वाले हमारी जाति के भाई-बहनों को बचायेंगे। अज्ञानता को दूर करके सबको प्रकाश की ओर लायेंगे, महर्षि की बताई गयी सत्य विद्या को अपनायेंगे । यही दीपावली और निर्वाण-दिवस के अवसर पर ऋषि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

ओ३म् स्योना पृथिवी नो भवानृक्षश निवेशनी ।
यच्छानः शर्म सप्रथाः । अप नः शोशुचदघम् ।। यजु० ३५/२१

पंडिता प्रेमदा लीलकन्त, वाचस्पति

शब्दार्थ :- **पृथिवी** - पृथ्वी, **नः** - हमारे लिए, **स्योना** - सुन्दर, सुखकारिणी, **अनृक्षरा** - काँटों और शत्रुओं तथा दुष्ट पुरुषों से रहित, **निवेशनी** - बसने योग्य, **भव** - हो, **स प्रथा** - सब प्रकार से विस्तृत होकर, प्रत्येक रीति से, **नः** - हमें, **शर्म यच्छ** - सम्पूर्णता देने वाली, शरण और सुख प्रदान करने वाली, **नः** - हमारे - **अघम्** - पाप को, कुकर्मों को, **अप-शोशुचत** - दग्ध करके दूर कर ।

प्रस्तुत मन्त्र यजुर्वेद के पैंतीसवें अध्याय का इक्कीसवाँ मन्त्र है। इस मन्त्र का ऋषि मेधातिथि है, देवता पृथिवी, छन्द, गायत्री और निचृदनुष्टुप है, तथा स्वर षड्ज है ।

इस मन्त्र का भाव यह है कि यह पृथ्वी सभीप्राणियों के लिए सुखकारिणी है, विघ्नरहित है, विस्तृत है और सब प्राणियों के लिए बसने योग्य है। इस पृथ्वी पर बसने वाले मानव सुकर्म करें और पाप-कर्मों से मुक्त हों।

असंख्य प्राणियों में से मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। उत्तम चोला प्राप्त कर वह अन्य जीवों से अच्छा जीवन व्यतीत करता है। सुख की प्राप्ति के लिए वह अनेक प्रकार से कोशिश तथा परिश्रम करता है। नदी के दो किनारों की तरह कभी इस किनारे तो कभी उस किनारे से मानव टकराता रहता है, अर्थात् सुख-दुख में पड़ा रहता है। जिस प्रकार मानव को भूख और प्यास लगती है, उसी प्रकार सुख और दुख दोनों मनुष्य का साथ नहीं छोड़ते।

सब खाद्य पदार्थ पृथ्वी से ही उत्पन्न होते हैं । उत्पत्तिकर्ता परमपिता परमेश्वर ही है, सविता माता है । मन्त्र में पृथ्वी की महानता का वर्णन किया गया है । सुख की प्राप्ति के लिए भक्त पृथ्वी माता से प्रार्थना करता है कि हे पृथ्वी माता ! आप (नः) हमारे लिए सुखकारिणी होवें। सब कुछ आप ही प्रदान करती हैं। आप के दिये खाद्य-पदार्थ से ही हमें बल तथा शक्ति मिलती है। पृथ्वी पर अनेक प्रकार की औषधियों की उत्पत्ति कर आपने असंख्य प्राणियों पर उपकार किये हैं, तथा उनकी ज़रूरतों को पूर्ण किया है। किस प्राणी को क्या चाहिए, यह केवल आप ही को पता है, किसी पदार्थ की कमी नहीं है।

यदि पृथ्वी पर खतरनाक प्राणी भी है, तो वह किसी न किसी प्रकार से लाभ ही पहुँचाने वाला होता है। भय और घृणा से इनसान द्वेष कर बैठता है और उसकी हत्या भी कर देता है। उदाहरण स्वरूप सर्प को ही ले लिया जाय । सर्प एक हिंसक प्राणी है। उसके डसने से मनुष्य परलोक सिधार जाता है, लेकिन सर्प का विष खतरनाक कैंसर (cancer) जैसे रोग को लाभ पहुँचाता है।

वेद माता कहती है कि परमात्मा दयालु है, कभी भी अपनी प्रजा को दुख नहीं देता। दुख मनुष्य के अपने ही कर्म का फल है। जिस प्रकार माँ अपनी सन्तान के लिए हित चाहती है, उसी प्रकार परमात्मा भी सब के लिए हितैषी है। इसीलिए हे पृथ्वी माता ! आप हमारे लिए (स्योना) अति सुख पहुँचाने वाले पदार्थ की उत्पत्ति करा सुखकारिणी बनें।

'प्रचते विस्तीर्णा भवति इति पृथिवी' – पृथ्वी को भूमि इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह अत्यन्त विशाल है। इसमें मुदुता भी है और धीरता भी । प्रकृति का सौम्य उसी में भरा है। पृथ्वी को धरती माँ भी कहा गया है। नारी की तरह उसमें सहनशीलता का गुण है। जिस प्रकार माँ अपनी सन्तान की रक्षा करने हेतु, उसका ठीक से पालन-पोषण करती है, हर प्रकार की कठिनाइयों से भिन्न रखती है, उसी प्रकार पृथ्वी देवी अपनी प्रजा के हित के लिए हितैषी बन सबके हित के लिए सुख प्रदान करती है।

मन्त्र में पृथिवी को 'स्योना' कहा गया है। 'स्योना' का अर्थ ही है सुन्दरता और सुख पहुँचाने वाली । पृथ्वी उपजाऊ है, अपने ऊपर प्रकृति रूपी सौन्दर्य को लिए दिन-रात घूमती रहती है। इतने सारे बोझ लिए अपनी प्रजाओं के लिए सूर्य का चक्कर लगाती रहती है। इसलिए पृथ्वी सहनशीलता का प्रतीक है। चाहे कितनी भी कठिनाई आ जाय, धैर्य धारण कर सब कुछ सह लेती है। माँ भी अपनी सन्तान के लिए दुख को सहन कर लेती है और उसकी खुशी में ही सन्तुष्ट रहती है ।

यहाँ भक्त प्रार्थना करता है कि हे पृथ्वी देवी ! आप (**अनृक्षरा**) काँटों और बाधक शत्रुओं, दुष्ट पुरुषों से रहित होवें और 'निवेशनी' – अर्थात् बसने योग्य (**भव**) होवें। मानव सुख और दुख का भोग करके ही सागर जैसे जीवन को पार करता है। दुख का कारण भी पृथ्वी पर निवास करने वाले से ही प्राप्त होता है। दुष्ट व्यवहारों वाले पुरुष गलत भाव से दुख ही पहुँचाता है, किसी का भला नहीं चाहता । इसलिए हे प्रभु ! आप सब दुर्व्यसनों को मिटा दें, हर कष्ट को दूर कर दें । हे देवी ! आप इस धरती को स्वर्ग के समान बना दें। आप के आश्रय में सब प्राणी

रहते हैं और आप (**सप्रथा**) सब प्रकार से विस्तृत होकर (**नः**) हमें (**शर्मयच्छ**) सुख प्रदान करें। माँ के आश्रय में सन्तान अपने आप को सुरक्षित पाती है और निर्भय हो, दृढ़-विश्वास तथा नयी उमंग के साथ आगे की ओर बढ़ती है। प्राणी भी पृथ्वी माता की गोद में सुरक्षित रहना चाहता है ।

पृथ्वी ऐश्वर्य का भण्डार है। पृथ्वी के पदार्थों से ही मानव धन-दौलत का स्वामी बनता है। कृषक बन्धु धरती में अन्नों के बीज बोकर अनगिनत मन अनाज पाते हैं और धन कमाते हैं।

व्यापारी भी पृथ्वी की उपज से ही अपने व्यापार को आगे बढ़ाते हैं। सोना-चाँदी, हीरे-मोती, तेल आदि सब पृथ्वी माता के गर्भ से ही निकलते हैं। पृथ्वी के भीतर बहुत कुछ समाया हुआ है। धरती की विशालता को नापा नहीं जा सकता। पृथ्वी माता अत्यन्त विशाल हृदय वाली है, अमुक्त हस्ता है, शान्ता है, सौम्य है। अतः पृथ्वी माता किसी को गिराती नहीं, बल्कि गिरते हुओं को बचाती है। पृथ्वी लोक दोष रहित है, उसमें किसी प्रकार का छेद नहीं। अग्नि, वायु, जल, सूर्य का ताप, चन्द्रमा की शीतलता सब पृथ्वी हर प्राणी के लिए प्रदान करती हैं।

पृथ्वी जैसी अद्भुत रचना को देखकर उस महान् रचयिता की प्रतीत होती है। भक्त प्रार्थना करता है – हे प्रभु ! आप असंख्य मानवों के लिए असंख्य स्वर्ण पदार्थ प्रदान करते रहना। सम्पूर्णता से सब का हित करते रहना और आप (**नः**) हमारे (**अघम**) पाप को अर्थात् दुष्ट विचारों तथा स्वभावों को (**अप-शोशु चत**) दग्ध करके दूर कर दें। आप प्रत्येक रीति से हमें सुख प्रदान करें।

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज और दीपावली

श्रीमती प्रियम्वदा जीवन, आर्य भूषण

सृष्टि के आदिकाल से ही जब-जब काल का बादल मंडराता था, मिथ्या ज्ञान तथा कल्पनाओं के गाढ़ अन्धकार से आच्छादित होता था तब-तब हमारे ऋषि-ऋषिकाओं एवं मुनियों ने इस धरती का उद्धार किया है । तथा समाज को अमूल्य ज्ञान द्वारा प्रकाशमय किया विश्व भर में भारत भूमि को ही पूण्य भूमि तथा ऋषियों का देश माना जाता है, क्योंकि इसी पुण्य भूमि पर अनगिनत महान् आत्माएँ पैदा हुई हैं, जिन्होंने विश्व में अपने अमूल्य ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। हज़ारों-करोड़ों वर्ष बाद भी हम उनके ज्ञान की सत्यता पर पूरा विश्वास के साथ अपने जीवन को तथा समाज और राष्ट्र को सजाने का पूरा प्रयत्न करते हैं ।

अब त्रेता युग का एक उदाहरण प्रस्तुत है । जब राक्षसों ने उपद्रव मचाया, यज्ञ में विघ्न डालने की कोशिश की थी तब ऋषि विश्वमित्र ने यज्ञ की रक्षा की थी। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने रावण जैसे राक्षस का बध किया था। द्वापर युग में योगीराज कृष्ण ने कंस की बंसी बजा डाली।

भारतीय इतिहास से पता चलता है कि जब-जब संसार में आत्मविमुखता, असंवेदनशीलता, उदासीनता, अकर्मण्यता, पाप-हिंसा, अपराध, दुराचार, व्यभिचार, निराशा, अविश्वास तथा आत्मग्लानि का भाव बढ़ जाता है तब इनका सुधार हेतु भगवान् अपने सच्चे प्रतिनिधियों को धरती पर जन्म देता है ।

इसी महान् तथ्य के अनुसार आधुनिक युग में जब भारत माता पर अविद्यारूपी अन्धकार चहुँ ओर फैला हुआ था, तब उसकी गोद में एक सुपुत्र पैदा हुए, जिनके बचपन का नाम मूलशंकर था और दूसरा नाम दयाल था। यही बालक आगे चलकर महर्षि दयानन्द जी हुए, जो मानव समाज के 'महान् समाज सुधारक एवं योगी बने।'

उन्होंने पूरे विश्व के मानवों को वेद का सन्देश दिया – **'मनुर्भवः'** - हे मनुष्य ! तू अपने उत्तम कर्म के द्वारा सच्चा मानव बन, तन से नहीं कर्म के द्वारा । इसी मुख्य उद्देश्य से उन्होंने १८७५ में मुम्बई शहर में तथा आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने 'आर्य' शब्द का अर्थ 'श्रेष्ठ पुरुष' बताया।

इस महान् योगी एवं समाज-सुधारक, वेद-प्रचारक, युग-पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 'दीपावली' पर्व की रात को हुआ था। यही कारण है कि हम आर्यसमाजी भाई-बहनें दिवाली की शाम को ऋषि-निर्वाण-दिवस भी मनाते हैं। उनके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। उनके द्वारा किये कार्यों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं।

अब हम 'दीपावली' पर्व क्यों मनाते हैं? इसपर एक प्रश्नावली प्रस्तुत हैं।

प्रश्न

१. क्या मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने अपने बचपन के दिनों में दीपावली नहीं मनाई थी ?
२. क्या जैन मत के तीर्थंकर महावीर जी ने बचपन में दीपावली नहीं मनाई थी ?
३. क्या हमारे गुरुओं ने या उनके पूर्वजों ने दीपावली नहीं मनायी थी ?

आइये इन प्रश्नों की सत्यता को जानने हेतु दीपावली कब से, क्यों और कौन मनाते हैं, इसपर थोड़ा विचार करें।

उत्तर – यह सनातन आर्यों का पर्व है । इसके मनाने का मूल कारण है नई फसल का आगमन और उस फसल के स्वागत व खुशी व्यक्त करने के लिए कृषक (किसान), वर्ग इसका आयोजन करता है। नये अन्न की प्राप्ति उत्सव का कारण है। सब लोग साथ मिलकर ईश्वर को धन्यवाद करने के लिए विशेष यज्ञ का आयोजन करते हैं, जिसमें नई फसल से आये अन्न को यज्ञ-अग्नि में आहुति डाली जाती है और उसके बाद सभी लोग उसका अपने घर पर उपयोग करते हैं । इस यज्ञ को शारदीय नवसस्येष्टि कहते हैं। **नव** - नवीन + **सस्य** - फसल वा खेती + **इष्टि** - यज्ञ – अर्थात् नवीन फसल के अन्न का यज्ञ । **शारदीय** - का अर्थ है – शरद ऋतु में किया जाने वाला यज्ञ।

यज्ञ का अर्थ ही होता है देव पूजा – संगतिकरण - दान। दीपावली के दिन कृषक यज्ञ करता है, अर्थात् उस परमात्मा को धन्यवाद देता है। जिससे उनके परिश्रम के साथ दिया अर्थात् समय पर वर्षा की, धूप दी, जिससे अनावश्यक कीड़े मरे, दोनों का पोषण हुआ। उस परमात्मा का धन्यवाद कर देव पूजा होती है। सारे किसान परस्पर मिलकर यज्ञ करते हैं। जो संगतिकरण है और समाज के गरीब वर्ग को अन्न का दान देकर यज्ञ की परिभाषा को सार्थक किया जाता है ।

वैसे ही श्रीरामचन्द्र जी के युग में भी फ़सलें होती थीं। उत्सव मनाया जाता था। भगवान् श्री रामचन्द्र जी और उनके पिता जी महाराज दशरथ जी ने भी नवसस्येष्टि यज्ञ किया था, क्योंकि उस काल में भी अन्न उसी ऋतु में तैयार होता था। आज भी होता है और भविष्य में भी होता रहेगा । मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी को छोड़िये, रावण ने भी नवसस्सेष्टि यज्ञ किया था।

इस पर्व का सम्बन्ध किसी प्रकार से किसी व्यक्ति विशेष से या घटना विशेष से नहीं है। हाँ उनकी अमर स्मृति और उनके कृतित्व से प्रेरित होने के लिए स्मरण, सहृदय धन्यवाद आदि अवश्य करना हमारा परम कर्तव्य है।

आर्यसमाज के संस्थापक, युग-पुरुष तथा प्रवर्तक, वेदोद्धारक, राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को निर्वाण दिवस पर **'कोटिशः नमन'**।

टापू भर में सभी भाई-बहनों को 'दीपावली' अभिनन्दन तथा शुभकामनाएँ।

वैदिक-यज्ञ

डॉ० विनय सितिजोरी, चिकित्सक

यज्ञ के संबंध में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, मनुस्मृति, महाभारत, गीता, रामायण आदि शास्त्रों में बहुत कुछ लिखा गया है। यज्ञ शब्द का परिमार्जित एवं परिष्कृत अर्थ आपकी सेवा में प्रस्तुत है – यज्ञ का अर्थ है देव पूजा, संगतिकरण, दान। देव पूजा का तात्पर्य है – विद्वानों का सत्कार करना। विद्वान् वे ही हैं जो अपने जीवन में सद्गुणों का विकास करें सद्गुणों की प्राप्ति के लिए वेदाध्ययन करें तथा ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना, संध्या-उपासना करें, हवन करें।

संगतिकरण का तात्पर्य है – सामूहिक व्यवहार सत्पुरुषों का संग करना - सत्संग में आना-जाना, यज्ञ-हवन में भाग लेना।

दान भी यज्ञ का एक अर्थ है – दान अर्थात् त्यागमय जीवन, सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सब मिलकर वस्तु का उपयोग करो यही दान का तात्पर्य है।

निश्चय से यज्ञ सर्व श्रेष्ठतम कर्म है, यज्ञ समस्त प्राणियों की और देवताओं की आत्मा है। क्योंकि यज्ञ से शरीर, आत्मा, मन और समाज की उन्नति होती है ।

जब कोई सभा या समाज लगता है, तब सभापति अथवा व्याख्याता अपना निर्देश, आदेश उपदेश, दान करता है, उस समय सभा उसकी पूजा करती है । अतः भोजन करने से लेकर सार्वभौम साम्राज्य की स्थापना तक सम्पूर्ण कार्य एक संगठित यज्ञ ही है ।

१. अंगों की दृष्टि से भोजन करना यज्ञ है
२. परिवार की दृष्टि से गृहस्थ में रहना यज्ञ है ।
३. समाज की दृष्टि से वर्णाश्रम व्यवस्था यज्ञ है ।
४. मानव जगत् की दृष्टि से सार्वभौम राज्य यज्ञ है ।
५. सम्पूर्ण चराचर की दृष्टि से संन्यासियों का सर्वभूत-हित के उद्देश्य से वेद प्रचार यज्ञ है ।
६. गुणवान, धर्मात्मा व्यक्तियों की मान प्रतिष्ठा करना, उनका सत्कार करना यज्ञ है ।
७. अपने समानवथ विद्या आदि गुणवालों के साथ पारस्परिक प्रेम, मिलजुलकर सहयोग की भावना से रहना, एक दूसरे के काम आना यज्ञ ही है ।

यज्ञ करने का उद्देश्य

हवन-यज्ञ में आहुति देना, वेदमन्त्रों का उच्चारण करना, अग्नि प्रज्वलित करना, सुगन्धित जड़ी-बूटियों तथा पुष्टिकारक रोगनाशक औषधियाँ जलाकर, उसमें घृत आदि डालकर, विश्व-कल्याण करना यज्ञ का उद्देश्य होता है ।

अपने जीवन में देवत्व प्राप्त करना। यज्ञाग्नि की तरह प्रज्वलित होकर आत्म-ज्योति को उन्नत करना, उसे समृद्ध करना इसी के साथ-साथ परम प्रभु-परमात्मा की आज्ञा का पालन करना, उसे प्रसन्न करना भी यज्ञ करने का उद्देश्य होता है ।

यज्ञ का महत्व

अग्निहोत्र करना स्वर्ग-समान सुख प्राप्ति का साधन होता है ।

यज्ञ करने वाला व्यक्ति समस्त दुखों से मुक्त हो जाता है, जो इस रहस्य को जानता है, वह अग्नि-होत्र करता है, उसकी पाप करने की प्रवृति नष्ट हो जाती है ।

प्रातः-सायं दोनों समय किया हुआ अग्नि-होत्र घरों की शुद्धि करता है। यज्ञीय अग्नि से शरीर, इन्द्रिय, मन, आत्मा, शुद्ध होती है। यह आम्यन्तर शुद्धि है। यज्ञ के द्वारा वायु, जल, वनस्पति, औषधि पत्र-पुष्प लता आदि सब शुद्ध होती है। यह बाह्य शुद्धि है ।

यज्ञ द्वारा होनेवाला लाभ

यज्ञ के बिना मानव अधूरा एवं यज्ञहीन पुरुष तेजोहीन हो जाता है।
यज्ञ करने से वाणी एवं मन स्वस्थ और शरीर नीरोग होता है, वाणी पवित्र होती है ।
मन, वाणी कर्म से सत्य का ग्रहण कर तदनुसार व्यवहार करना – मनसा-वाचा-कर्मणा, एकरूपता का होना, मन, वचन, कर्म से सर्वदा पवित्र रहना।

अब यज्ञ करने से हमारी भावनाएँ कैसी बनती हैं–

- अनुचित रूप से किसी भी पदार्थ पर अपना अधिकार करने का प्रयत्न न करना ।
- संयमित जीवन व्यतीत करना, आचार-विचार को पवित्र रखना ।
- इंद्रियों का निग्रह करना ।
- प्रलोभन व महत्वाकांक्षा - आत्माश्लाधा के आकर्षण से सर्वथा पृथक रहना।
- आत्म-निरीक्षण करना - अपनी बुराई-भलाई पर सूक्ष्म दृष्टि रखना, उसका सदा अवलोकन करना – पर-निन्दा से यथाशक्ति बचना ।
- ईश्वर पर पूर्ण विश्वास तथा आस्तिक भावना रखना ।
- अपने से छोटे-बड़ों का आदर करना ।
- परमात्मा से आत्मा की संगति करना ।
- सर्वहित में अपना हित समझना।

१. यज्ञ मानव को दानशील बनाता है, दूसरों को देना सिखाता है।
२. यज्ञ मनुष्य को परोपकारी बनाता है, मनुष्य की ममता को, आशक्ति को दूर करता है ।
३. सर्वथा त्याग की भावना यज्ञ का प्रमुख उद्देश्य है, इसी भाव को प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया हुआ – स्वाहा शब्द कह रहा है – स्व का त्याग । स्व अ आ अ ह सब प्रकार से त्याग भावना ही यज्ञ का लक्ष्य है ।
४. यज्ञ मानव में स्नेह का सींचन करता है, उसे स्नेही बनाता है। स्नेह ही मनुष्य के जीवन को स्थिर रखता है। धृत की आहुति में स्वयं स्नेह है, सरसता है, ज्योति है दीप्ति है, प्रकाश है - ये सब गुण यज्ञ में हैं।
५. यज्ञ के द्वारा व्यक्ति की आत्मा तेज, सर्वस्व ओज बढ़ता है, मनोबल स्थिर रहता है ।
६. यज्ञ के द्वारा शरीर भी रोग रहित स्वस्थ दीर्घायु वाला होता है ।
७. यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति करता है, ऊँचा उठता है ।

दीपावली महोत्सवः

डॉ० श्रीमती ऋचा शर्मा मोकूनलाल, एम.ए., पी.एच.डी (संस्कृत)

दीपावली आर्याणाम् अतीव प्रसिद्धं मुख्यं च पर्व अस्ति । अस्मिन् प्रति गृहं स्वच्छं कृतवा रात्रौ दीपमालिकाः प्रज्वाल्यन्ते इदं पर्व प्रतिवर्ष कार्तिकमासस्य अमायामायाति । एक कथायाः माध्यमेन अस् पर्वणः शिक्षां धारयामः ।

कस्यचिद् नृपस्य त्रयः पुत्राः आसन् । वृद्धावस्थायाः कारणे सोऽचिन्तयत् – त्रिषु पुत्रेषु कस्मै पुत्राय राज्यभारं दातव्यम् । नृपं चिन्तामग्नं दृष्ट्वा एकेन संन्यासिना उपायः प्रस्तुतः । उपायं श्रुत्वा राजा अमोदत । सर्वान् पुत्रान् आहूय अवदत् । पञ्चदश दिवसानन्तरं युष्मासु यः परीक्षायां योग्यतमः भविष्यति तस्मै च राज्यभारं दत्त्वा अहं वनं प्रति गमिष्यामि ।

पित्रा गते – ज्येष्ठ पुत्रेण चिन्तितं वृद्धत्वेन पिता विक्षिप्तः कथं शतमात्र रूप्यकेन भवनं पूरयिष्यति । एवं चिन्तयित्वा सः नगरं प्रति अगच्छत् । किञ्चिद् दूरे इव तेन जनसमूहस्य कोलाहलः श्रुतः गत्वा च अपश्यत् - द्युतक्रीडायाम् एकः मानवमात्र दश रुप्यकेन सह क्रीडित्व स्वहस्तैकं जितवा च स्व गृहं प्रति अगच्छत् । अनेन चिन्तित शतरूप्यकेन क्रीडित्वा लक्षैकं रूप्यकं अर्जयिष्यामितदा स्वभवनं येन केनापि वस्तुना पूरयिष्यामि । परं सः पराजितो भूत्वा स्व गृहम् आगच्छत् ।

मध्यम पुत्रेण चिन्तितम् – निश्चयेन मम पिता अद्य मदिरादिपानेन उन्मते भूत्वा एवं कथयति – शतरूप्यकेन मात्र नैतद् संभवति । एवं चिन्तयित्वा तेन समीपे एवं विशालमोटरयानं (ट्रक) चत्वारि अपश्यत् । तेषां समीपे गत्वा अपृच्छत् - कथम् अत्र ? ते अवदन् ।

इमम् अयस्करं (कूडा-कचरा) इतः नगराद् दूरे प्रक्षिणामः । श्रुत्वा सः अवदत् – मम भवने प्रक्षिपतु भवान् । अस्य कार्यस्य कृते शतं रूप्यकं दास्यामि । तैः चिन्तितम् विक्षिप्तोऽयं जनः एवं तैः तथा कृतम् । मध्यम पुत्रः प्रसन्नो भूत्वा राज्यप्राप्तिः निश्चतम् एवं स निश्चिन्तोऽभवत् ।

कनिष्ठः पुत्रोऽचिन्तयत् मम पिता पंचविशतिः पर्यन्तं राज्य-संचालनं सुचारु रूपेणकरोत् । अतः भवनं दत्वा शतरूप्यकं च दत्वा भवन विषये यत् अकथयत् तत् सत्यम् । एवं अहम् उपायं चिन्तयामि ।

पंचदशदिवसानन्तरं नृपः सचिव मण्डलेन सह पुत्राणां समीपे अगच्छत् । पित्रादिकं दृष्ट्वा स रोदनमारब्धवान्। तस्य सर्व वृत्तान्तं ज्ञात्वा मध्यम पुत्रम् अपृच्छत्। सः प्रसन्नतया स्व भवनम् अदर्शयत् । दुर्गन्धर्णं भवनं द्रष्ट्वा सर्वे एव तं पुत्रं निन्दितवन्तः । कनिष्ठ पुत्रः प्रणम्य आदरपूर्वकं स्वभवनं दर्शितवान् । दृष्ट्वा च सर्वे सहैव अवदन् अनेन आलोकेन घृतदीपकैः स्वभवनं पूर्णम् अकरोत्। प्रहृष्ट मनसा नृपः तस्मै राज्यं दत्वा वनं प्रति गतवान् ।

एवं दीपावलीपर्व अस्मान् बोधयति – ईशकृपाया अस्माभिः शरीर-भवनं लब्धम् । इमं भवनं केचिद् जनाः मदिरापानद्यूतादि दुर्व्यसनेन शरीरं नाशयन्ति । अपरे जनाः काम क्रोध लोभादि दुर्गुणैः स्वान्तःकरण–भवनं पूरयित्वा स्वं नाशयन्ति । विरलाः एव जनाः दया दानपरहितादिकर्मेषु संलग्नाः स्व शरीर – भवनस्य सदुपयोगं कृत्वा आनन्दं लभन्ते । एवं दीपमालिकया सह अन्तकरणमपि सद्गुण - आलोकेन भूषयितव्यम् ।

अन्ते च सत्यमुक्तं केनापि कविना –

वदनं प्रसाद सदनं सहृदयं सुधामुचो वाचः ।
करणं परोपरकरणं येषां केषां न ते वन्धाः ।।

English version of the Sanskrit text

Deepāvali Mahotsava

Deepāvali is one of the most popular and main festivals of the Aryas. It is celebrated on Amāvasyā (darkest night) of the lunar month of Kartika (October or November). People clean their houses and light lamps. The following story

A king had three sons. Growing old, he started thinking about which of them is best fit to be the heir to the throne. He sought and agreed to the advice from a sage. He called upon the three sons and informed them that their aptitudes would be tested to appoint the most able as king, after which he would renounce the crown and retire to the forest as a hermit. The king gave hundred rupees to each son and an empty room which they had to fill.

The eldest son had his thoughts: His father was old and disturbed. He took the hundred rupees and left the palace. The whole kingdom was also upset. Some distance away, there was an uproar among the crowd. Upon reaching there he found that one person had won thousands of rupees by gambling ten rupees. He thought that he could win millions from the hundred rupees but he lost and went back home.

The second son had his thoughts: surely his father was drunk and made that statement. He also took a hundred rupees and left the palace. He saw a garbage truck. He greeted the driver. He requested him to put the garbage inside his room instead of disposing it out of the city and paid him hundred rupees. He happily returned to the palace.

The youngest son had his thoughts: His father had well ruled for twenty five years. He left the palace with a hundred rupees. He think over his father's request and concluded that surely there is a way to realise the wish.

After fifteen days, the king called meeting of the council of ministers and his sons. The first son refused access to his room as he had lost the hundred rupees in gambling. The second son's room was foul-smelling from the decomposing garbage and no one dared to enter the room. The third son welcomed all with due honours. He had bought ghee and kept a lamp lit to flood the room with light. The king appointed the third son as the new king.

Deepāvali reminds us of the grace of God. Our body is the room to be filled. We can ruin ourselves through bad conduct such as gambling and / or addiction to alcohol and other intoxicating substances. Other evils like immoderate desires / cravings, anger, greed, etc. leads to self-destruction. We hardly find morally upright people, who have compassion and are benefactors working for the welfare of others. Such people make proper use of the body and derive joy.

When we fill our hearts and minds with with good qualities and high merit, the shine will be like the light from the arrangement of lamps during Deepāvali.

A poet rightly said: *"He who is soft spoken, whose facial expression reflect peace, satisfaction and delight is always admired by all."*

Dr. Richa Sharma Mokoonlall, M.A., PhD (Sanskrit)

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम

त्रेफ़ समाज का नब्बेवाँ स्थापना दिवस

रोज़हिल नगर में पाये जाने वाले त्रेफ़ आर्यसमाज ९० साल का हो गया । स्थापना दिवस के ९० वें वार्षिकोत्सव मनाने के लिए समाज की अन्तरंग कमिटि ने आर्यसभा के तत्वावधान में प्लेन विलियेम्स परिषद् के सहयोग से सात दिनों का समारोह मनाया, जो सोमवार १८ अक्टूबर से लेकर रविवार २३ अक्टूबर तक सफलतापूर्वक चला। नित्य प्रति आर्यसभा के किसी-न-किसी अन्तरंग सदस्य उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ाते रहे, जिनमें सभा प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, मंत्री सत्यदेव प्रीतम, परिषद् के प्रधान रवीन्द्र सिंह गौड, प्रो० जगेसर आदि थे। ऊपरी प्लेन विलियेम्स और नीचले प्लेन विलियेम्स के दोनों मुख्य पुरोहित श्री महादेव और र० सीराज ने उपस्थिति देते हुए लोगों को सम्बोधन किया ।

रविवार दि० २४.०९.२०१७ को दोपहर २.०० से ४.०० बजे तक समारोह की समाप्ति में स्थानापन्न प्रधान मंत्री माननीय कोलेन्दावेलू के साथ मंत्री माननीय ... और नगर पालिका के मेयर उपस्थित थे। कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए स्कूल के बच्चों एवं महिला समाज की बहनों द्वारा भजन-कीर्तन हुए । मौके पर लम्बे समय तक सेवा कार्य करने वालों को सम्मानित किया गया ।

गुडलेन्स आर्यमंदिर में श्रावणी एवं वेदमास

गत रविवार ०१ अक्तूबर २०१७ को प्रातःकाल ९.३० बजे गुडलेन्स के आर्यमंदिर में रिव्येर-जू- राम्पार आर्य ज़िला परिषद् ने आर्यसभा के तत्वावधान में श्रावणी एवं वेदमास में किए गए यज्ञों की पूर्णाहुति की। ज़िले के मुख्य परोहित पं० धर्मेन्द्र रिकाई द्वारा गायत्री यज्ञ सम्पन्न किया गया । मौके पर राष्ट्रीय सभा की सरकार के मंत्री माननीय आसीत गंगा जी ने उपस्थिति देते हुए अपने संदेश में समाज में हो रहे असामाजिक तत्वों की ओर ध्यान दिलाया और कहा आर्यसभा और सरकार का एक ही मिसन है और वो है इन सब बुराइयों को दूर करना ।

ज़िले के अन्य समाजों का प्रतिनिधित्व करते हुए अनेक सदस्य उपस्थित थे। परिषद् के प्रधान भाई विवेकानन्द लोचन परिवार सहित उपस्थित थे, साथ ही शेखर रामधनी सपत्निक और परिषद् के मंत्री डॉ० जयचन्दलाल बिहारी अन्य सदस्यों के साथ कार्य की शोभा बढ़ाते हुए मंच पर असीन्न थे।

मातृ सभा के महामंत्री सत्यदेव प्रीतम शुरू से अन्त तक रहे और अपना संदेश भी दिया । प्रान्त के भजनिकों द्वारा भजन के माध्यम से संदेश दिये गये । उसी रोज़ शाम के ३.०० बजे से लेकर ६.०० बजे तक हाम्लेट, मोर्सेल्माँ-सें-तान्द्रे आर्यसमाज ने भी अपने किये गए समस्त यज्ञों की पूर्णाहुति की ।

याद रहे कि वहाँ जो मंदिर भवन बन रहा है, उसी में सफलतापूर्वक यज्ञ द्वारा कार्यारम्भ किया गया । यज्ञ तरुण पंडित दुखी जी की देख-रेख में हुआ। कार्य का संचालन बखूबी पंडिता पार्वती लक्ष्मण ने किया ।

प्रसन्नता की बात है कि वहाँ महिला समाज, स्थानीय समाज से हिलमिल कर एक दूसरे को सहयोग देते हुए

निर्माण कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। महिला समाज में लगभग २५-३० सदस्याएँ हैं और पुरुष समाज में केवल १७ सदस्य हैं, पर उनकी हिम्मत को दाद देनी चाहिए। प्रधान और मंत्री वृद्धावस्था में होते हुए भी हिम्मत नहीं हार रहे हैं। प्रधान चन्दू जी और मंत्री ठाकुर जी दोनों वहीं जन्मे हैं और किशोरावस्था से ही वहाँ के समाज में प्रवेश हुए थे। शक्कर कोठी से ज़मीन का टूकड़ा मिला और आर्य सभा और दूसरों की आर्थिक सहायता से निर्माण कार्य को बहुत आगे बढ़ा दिया गया है ।

बारी-बारी से पाम्प्लेमूस ज़िला परिषद् के प्रधान एवं मंत्री क्रम से डॉ० लालबिहारी व रामधनी ने अपने भाषणों से सभी सदस्यों से माँग की कि सब लोगों को मिलकर इस मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा करना चाहिए।

आर्यसभा के महामंत्री ने प्रसन्नता ज़ाहिर की कि इतने कम लोग होते हुए, मिलकर स्वामी दयानन्द के स्वप्न को पूरा करने में लगे हुए हैं। महिला समाज की मंत्रिणी ने इतनी अच्छी भाषा में अपना संदेश दिया कि महामंत्री ने उन्हें विशेष धन्यवाद दिया ।

रिपाई आर्यसमाज की गतिविधियों में एक नवीनता

लीलामणी करीमन, एम.ए., वाचस्पति

गत गुरुवार २१ सितम्बर की शाम को रिपाई आर्यसमाज शाखा नं० ४३९ की एक ऐसी पुरानी सदस्या के गृह पर यज्ञ-सत्संग हुआ, जिसने अपनी अधिकांश जीवन-यात्रा सामाजिक और धार्मिक कार्यों में बिता दी। पर आज ९० वर्ष की अवस्था में वह माता जीवन के थपेड़ों से व उतार-चढ़ाव से गुज़रते हुए, ऐसी स्थिति में आ गई है कि उठने-बैठने, खाने-पीने व चलने-फिरने के लिए उसे अपने परिजनों की सहायता की आवश्यकता लेनी पड़ती है। किसान का जीवन बिताना, घर-परिवार, खेती-बारी, समाज को सम्भालते हुए जीवन बिताना, बीच मंझधार में पति का साथ खो देना एवं जवान बहू, फिर बेटे की अचानक मृत्यु – एक नारी के लिए इससे बड़ा दुख और क्या हो सकता है ! जिस माता को रिपाई गाँव की सरदी सहने के लिए कभी स्वेटर पहनने या शॉल ओढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी, वह आज मन से, शरीर से इतनी टूट चुकी है कि उसके शारीरिक बल ने जवाब दे दिया है। फिर भी ऐसी दुखिया माता का सौभाग्य है कि उसकी सेवा में परिवार का हर सदस्य तन-मन-धन से लगा हुआ है ।

माता शान्ति जवाहिर गाँव के सुप्रसिद्ध महेश सरदार (स्वर्गीय श्री रामनरायण घूरा) की धर्म-पुत्री है । धार्मिक-त्यागी पिता की पुत्री भी धार्मिक-त्यागिनी बनी । गुरुवार २१ सितम्बर २०१७ को रिपाई आर्यसमाज के सदस्यगण माता शान्ति के सुपुत्र-प्रकाश जवाहिर वर्तमान सभा मन्त्री के निमन्त्रण पर माता शान्ति के घर पहुँचे । पंडिता लीलामणी करीमन द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। माता के रोग-निवारण के लिए यजमानों ने आयुष्काम यज्ञ के विशेष मंत्रों द्वारा श्रद्धा-भाव के साथ आहुतियाँ दीं। उसी अवसर पर यशवीर जवाहिर के जन्म की माता के पोते की बीसवीं वर्षगाँठ के लिए भी विशेष मंत्रों के साथ दीर्घायु आदि की कामना करते हुए आहुतियाँ दी गईं।

विशेष ध्यान देने की बात यह है – समाज की ओर से माता शान्ति एवं परिवार के सुख के लिए 'अग्नि होत्र विधि' की एक प्रति देते हुए, पंडिता जी ने उनके बच्चों को, (विशेषकर उनकी पुत्री विद्या को, जो दिन-रात माँ की सेवा में लगी रहती है, सहज तरीके से नित्य प्रति अग्निहोत्र करने का नम्र निवेदन किया और साथ में उसकी सरल विधि भी बताई ।

नवयुवक बच्चे को समाज ने डॉ० गंगू जी की पुस्तक सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति उपहार के रूप में दी । इस विशेष गतिविधि की माता शान्ति के परिवार के सभी सदस्यों, समाज के सदस्यों एवं गाँव के उपस्थित लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

समाज ने संकल्प लिया है कि इस प्रकार के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए निकट भविष्य में गाँव के एक अन्य रोगी के घर पहुँचकर यजन-कार्य के माध्यम से उनका मार्ग-दर्शन करना है, उनकी मानसिकता को सशक्त बनाना है एवं जीवन-सुख में वृद्धि लानी है ।

पूर्वीय प्रान्त में दर्शनाचार्य आशीष जी की प्रचार-यात्रा

पंडिता प्रेमदा लीलकंठ, वाचस्पति

तपोवन आश्रम, देहरादून भारत से पधारे हुए दर्शनाचार्य आशीष जी का आना मॉरीशस आर्य बन्धुओं के लिए बड़ा लाभदायक रहा ।

देश के कोने-कोने में पहुँचने वाले आचार्य आशीष जी अपनी मधुर वाणी और शान्त स्वभाव से सब के मन में घर कर गये ।

पूर्वीय प्रान्त में भी उनका आगमन बड़ा ही लाभदायक रहा । उनके शुभागम से यहाँ का धार्मिक वातावरण ही बदल गया । हमने हृदय से स्वागत करते हुए उन्हें आसन दिया । आचार्य जी की प्रचार-यात्रा कुछ इस प्रकार रही :– **छः सितम्बर** को पौर्णमासी यज्ञ पर उन्होंने अपनी उपस्थिति मार लाशो आर्य मन्दिर में दी । उनका वक्तव्य बच्चों से प्रश्नोत्तर पर आधारित रहा । प्रश्न महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, परमात्मा और वेद विषय पर आधारित थे। सही उत्तर देने पर बच्चों को इनाम भी मिला । शाकाहारी भोजन पर ज़ोर देते हुए अपना सन्देश लोगों तक पहुँचाया।

ग्यारह सितम्बर को कॉं-दे-मास्क समाज में पहुँचे । उनका प्रवचन सराहनीय रहा । उन्होंने सभी के मन अपनी ओर आकर्षित किये।

बारह सितम्बर को बोनाकेई 'विरजानन्द समाज' में योगासन और स्वास्थ्य सम्बन्धी वक्तव्य देकर सबको आनन्दित कर दिया । उन्होंने बताया यदि मानव को स्वस्थ रहना है तो योग सबसे अच्छा साधन है ।

तेरह सितम्बर को कॉं आकाशीया पोस्ट-दे-फ़्लाक में उनका प्रवचन 'ध्यान' विषय पर रहा । यहाँ पर भी परीक्षा में बैठने हेतु, पढ़ाई करते समय ध्यान किस प्रकार लगाया जाता है, बच्चों को सिखाया ।

चौदह सितम्बर को त्रु-दो-दुस समाज में भी उनका वक्तव्य बच्चों के साथ प्रश्नोत्तर द्वारा रहा । भजन-कीर्तन भी किए गये । उनका प्रवचन बड़ा ही शिक्षाप्रद रहा ।

बेलमार चिरंजीव भरद्वाज आश्रम में दो दिनों की गोष्ठी भी रखी गयी । उन्होंने गायत्री और ओ३म् जप पर ज़ोर देते हुए ध्यान लगाने की बात कहीं। बच्चों को किस प्रकार आकर्षित
करना है, इसपर कई लाभदायक विचार दिये ।

आचार्य जी ने बच्चों से मिलकर उनके अन्दर की प्रतिभा को जागृत करना चाहा । उनके सन्देश से ऐसा लगा कि उन्होंने बच्चों की कमियों की पूर्ति कर, उनकी अन्तर्ज्योति को जगाना चाहा । बच्चों के लिए नवीन साधनों को प्रयोग में लाना है, तभी बच्चे आगे बढ़ेंगे।

अन्त में प्रत्येक जगह पर IVA (International Vegetarian Association) का मुख्य उद्देश्य समझाकर सभी को होने वाले एक समारोह में आमन्त्रित किया । वे सभी को आशीर्वाद और धन्यवाद देते हुए अपने स्थान के लिए प्रस्थान हुए।

DIVALI – LIGHT IS MIGHT

Dr. Indradev Bholah Indranath, P.B.H.

"God lead me from darkness to light." Upnishad

Light is might. Light is God's power. It has the power to dispel the darkness and brighten the world. Light signifies the triumph of light over darkness, of good over evil and kindness of over cruelty.

Divali is the festival of lights. Lightening the earthen lamps or electric bulbs with twinkling light is really for show but the true meaning of light should be shown. Light comes from Agni. About Agni the Veda says – "Thou Agni hast made the sun, ageless stars mount the sky, conferring light on man. Thou Agni, art the people's light. Dearest and best, thou art by our side. Thou Agni, art the bestower of intellectual brilliance, bestow on me intellectual brilliance. Whatever deficiency there is in me, Agni, make that up."

Light is necessary for all. Everyone needs it. So celebrating the festival of light should not be confined to a particular community. All People owe its respects indistinctly. Even the New Testament says – *"I am the light of the world."* Jesus has just expressed his views on light – *"Let your Light so shine before men, that they may see your good deeds and glorify your father who is in heaven."*

Divali celebration is not for show only. Celebrating the Divali with much eagerness and with no prejudice and hatred, has very good significance of respect mixed with cultural manifestation.

As Divali is a sacred festival of lights, in this connection Sir Walter Role has thus expressed his views – *"The most divine light which shines only in those hearts eliminates all the worldly filthiness and replaces within sacred tidiness."*

HAPPY DIVALI TO ALL

PRAISE, PRAYER, WORSHIP OF GOD

The subject of praising the Divine is touched upon in the verse *Yobhutam cha* ...etc. The verse *Tejosi* …etc. treat of praise and prayer of God: "O Supreme Lord! You shine forth with your attributes of infinite knowledge, fill me with the light of knowledge unlimited! You are of infinite prowess. O Lord! Endow me with firm vigour and activity of body and mind (intellect) through your grace. O Lord of Supreme might! The power is infinite, please grant me excellent power. O Lord! Thou art of moral force (*ojas*), do vouchsafe unto me the strength (born of) truth and knowledge; O Lord! In you resides righteous indignation towards the evil-doers, impart by your will that indignation to me also! You are forbearance; enable me to bear pleasure and pain with equanimity." Yajurveda 19.9

"O most glorious Lord! Make my senses (the sense of hearing, etc.) and the mind strong and healthy. May it be your grace be upon us to protect us and make us the possessors of all the good things of the world. O Lord! In you are the treasures of the highest wisdom. May the best riches and the glories of ideal rule, be for our benefit."

God commands men to acquire and aspire for these good qualities. "O Lord! May our wishes always become fruitful through your grace. May our aspirations to realise the ideal administration of the global village (chakravarti rajya) never be frustrated." Yaju 2.10

"O God Agni! You always endow us with that excellent and steady understanding which is constantly sought after by the learned and the wise *Svaha*" Yaju 32.14.

[The author of the Nirukta in 8.20 makes the following observations on the word *Svaha* which means that all men should always employ sweet and mild speech for the good of all creatures. They should utter with their tongue what they feel in their own consciousness. They should call what belongs to them their own and should never claim as theirs what belongs to others. They should offer oblations into the fire after purifying and dressing themselves properly and carefully.'

The next verse contains God's blessings to men : "O Men! May your arms and weapons, such as firearms, guns and cannon, bows and arrows, swords, etc., be very firm, strong and praiseworthy. Through My grace, may they bring about the defeat of the enemies and lead you on to victory; and may they check the onslaughts of the enemy's forces and defeat and rout them. May your armies be highly efficient (well-equipped and well trained) and strong, so that your worldwide empire may remain intact and secure. May foes, perpetrators of foul deeds, who oppose you, be worsted (in battle). But my blessing benefit only those who do righteous deeds and never on those who are guilty of treachery and injustice." The meaning is that God never blesses those who act in an unrighteous manner. (Rigveda 1.3.18.2)

"O Lord! Render us happy, strong and free that we may entertain high and noble aspirations and obtain the most nourishing of foods. Fill us always with untiring and unflagging zeal to put forth our utmost efforts for attaining the rank of a Brahmana with a view to acquire the knowledge of the Vedas. Make us the bravest of the brave and endow us with the instincts of a Kshatriya that we may become partners of a worldwide empire and wield of sovereign power. Enable us to make the utmost endeavours to acquire scientific proficiency and mechanical skills in the use and management of machines and vehicles, so that we may do good to all mankind and other things like the sun, fire, etc., which are serving the universe by supplying it with light and contributing to its welfare. O Lord of righteousness! You are just, may we adore the rule of law and justice. O universal Benefactor! You are free from ill-will, make us also friendly and devoid of feelings of enmity towards all. O Lord! May the benefits of good government, good laws and precious things be for us, may we become good educators, learned in the Vedic lore, good rulers, and good businessmen and citizens. We pray to you to endow us with all excellent qualities and enable us to realize all our desires and aspirations" (Yaju 38.14.)

Article contributed by : Dr. Acharya Deendayal Vedalankar from "An Introduction to the Commentary on the Vedas."

Deepāvali 2017

A burning lamp is seen by its own light

A lighted lamp always leaves a positive feeling. It dissipates darkness and illuminates the path of many. Likewise, an enlightened person shines in all splendour by the light of true knowledge. Dharma (*virtue*) is the one-and-only foundation for each of his actions (*karma*). Total harmony between thoughts, speech and physical actions makes him a *mahātmā* (noble person). He is ever vigilant as the slightest inconsistency will result in an abrupt plunge.

The light of knowledge

Expounding on the words *jyoti* and *agni* in the Vedas, Maharishi Dayanand Saraswati emphasises more on the ever-brilliant light of knowledge in lieu of the physical light. True knowledge is the essential, subtle yet invisible inner light; the one and only treasure which multiplies when shared and none can steal.

Lightening the path towards excellence

The effervescence of the increasing number of discoveries and inventions, modernism, fashion and the little knowledge of nature has muddled our lives; more than ever mechanical and artificial. Most of us stand as slaves of the senses and of everything associated thereto. The bubbles of that effervescence are mind-numbing.

"Me, mine and myself" has become the only centre of attention. Overlooking the goodness in others, we simply

focus on the negative side. We see the glass as half-empty rather than half-full. We indulge in dirty politics, mud-slinging, etc., only to take control. Our logic fails vis-à-vis the law of karma, in spite of the fact that our subconscious constantly hammers: "we shall reap only and only what we sow!"

Virtue : the foundations of real human and spiritual beings

A discarded strong block of iron rusts. When cast into fire, that rusted block shines with splendour and regains its strength. Similarly, man needs to undergo self-transformation by shedding all narrow feelings and ill-will.

To be virtuous in all actions involves better awareness of the self, lighting the way to self-realisation. True knowledge empowers us to recognise the soul (ātmā) and see each living being as a friend: *"mitrasya chakshushā samikshāmahe"*; and to create the proper environment for the sublime underlying human quality to germinate, grow and bloom to excellence.

Virtue, when applied in day-to-day life, speaks volumes on our commitment to humanity. On the other hand vices wipe out the human aspect in our own life first, then snowball on the life of our relatives and friends and society at large. The choice is obvious:

A The '*Shreya* mārga' is the path to extravagance, reckless spending and consuming-only-for-the-sake-of-consumption where we live to please others more than ourselves and live to the taste of others than our own taste; and

A The '*preya* mārga' is the path of moderation, the judicious use of resources, where we live life and we feel happy from our own standpoint and not comparing to others, as well as we live to our own taste rather than the taste of others. This path leads to spirituality – spiritual reality in life.

Sa no bodhi pura etā sugeshoota durgeshu pathikaridvidvānah… (RV 6.21.12): An enlightened person is virtuous at all levels: mental, vocal and physical. He leads by example. Only such persons are apt to conduct satsanghs (congregations where people familiarise themselves with the living values of the Vedas).

Ā janāya druhane pārthivāni divyāni deepayontarikshā… (RV 6.22.8: An enlightened person spreads the fragrance of noble character, deeds and innate aptitudes. He possesses the correct knowledge of the universe (nature, soul and the supreme soul). As a role model, he gives a sense of direction to all to uphold Dharma in all dealings.

A devoted child is one who pays attention to the directives of his parents and grows on to follow the righteous path. A devoted student pays attention to the directives of the preceptor and puts up 100% physical and mental efforts to the learning process.

In the same way, a devotee of the Lord is someone who lives, at all times (100%), the universal Vedic values, the precepts handed over to humanity by God. Brahma dveshe or Brahma druhane refers to anyone who fails to abide by those edicts and/or disrespects the laws of nature.

Dharma (Virtue): the lamp showing the holistic approach to wellness / well-being

Sage Manu, the universal lawgiver, describes the 10 essential rules of virtue as: (1) patience; (2) forgiveness / compassion/ empathy; (3) fortitude / self-control; (4) non-stealing; (5) external & internal cleanliness; (6) control of senses; (7) sense of reasoning; (8) knowledge; (9) truthfulness; and (10) non-anger / never to lose temper.

The ten commandments as the first two limbs of Yoga by Sage Patanjali are: Yama {(1.1) non-violence, (1.2) truth, (1.3) non-stealing, (1.4) self-control / control of senses, (1.5) non-attachment or non-possessiveness of superfluous thoughts and stuffs} and Niyama {(2.1) internal & external cleanliness, (2.2) contentment, (2.3) austerity / resilience, (2.4) self-study / self-cultivation, (2.5) surrender to God / conforming to the laws of nature}.

Deepāvali is time to acquire true knowledge, apply that knowledge in our daily life and put up 100% of our physical and mental aptitudes to live the precepts of virtuous living! The aroma of righteousness would stick to us as the skin of our body. Such behaviour will lead us to be masters of material as well as spiritual treasures; indeed, a U-turn from the current cravings for material wealth which has permeated our prayers, even during Deepāvali.

A burning lamp needs no introduction as it lights the path of many. Man's excellence lies in divine illumination …moderation in the outer world will leave us time and resources to look after our inner world. Deepāvali is time to review our objectives and strategies towards the cherished self-transformation.

The caution from the Shāntiparva of the Mahābhārata is self-explanatory :

Adhyaiva kuru yachchhrayo mā twām kālotyagādayam | Na hi pratikshate mrityuh kritamasya na vā kritam ||

Let us carry out all noble actions at this very moment, lest time passes us out
For death does not wait for anyone to complete unfinished jobs.

Shri Bhartrihari issues a resonating call: *Adyeyva vā maranamastu yugāntare vā* |
Nyāyāta pathah pravichalanti padam na dhirāh ||

Whether death comes now or there still remains a long time in our life line
An enlightened person never swerves from the principles and values in day-to-day life.

Deepāvali is time
To work wonders
Gain health, material well-being
And inner enlightenment
To judiciously re-allocate our resources
Less on the outer lights
More to kindle the inner light within us!

Bramdeo Mokoonlall

Bibliography : RigVeda Bhāshya, Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumikā, PanchaMahāyajna *(Maharishi Dayanand Saraswati)*; Manusmriti; Yog Darshan *(Maharishi Patajali & Vyāsa Bhāshya)*; Yogārtha Prakāsh *(Swāmi Satyapati ji Parivrājak)*; Viveka vairāgya Shloka Sangraha *(Darshan Yog Mahavidyālaya)*; Satyārtha Bhāskar *(Swāmi Vidyānand Saraswati); Vedic Kosha (Rajvir Shāstri).* Photos (*Internet*)

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

मॉरीशस आर्य महिला मण्डल

के सहयोग से

त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन

गुरुवार २३ से शनिवार २५ नवम्बर २०१७ तक कर रही है ।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए आपको हित-मित्र, परिवार सहित निमंत्रण है । जो लोग सक्रिय रूप से भाग लेना चाहते हैं, वे शीघ्राति-शीघ्र पत्र द्वारा आर्यसभा मॉरीशस को सूचित करें।

जो सम्मेलन में आलेख प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे अक्तूबर के अंत तक अपना आलेख सभा को भेजने की कृपा करें। भाषा – अंग्रेज़ी व हिन्दी में आलेख भेजने की अन्तिम तिथि – **३१ अक्तूबर २०१७** ।

***मुख्य विषय* : नारी का उत्तरदायित्व**

उपविषय :

१. नारी शिक्षा एवं सन्तान का निर्माण
२. धर्म, संस्कृति, भाषा की रक्षा में नारी की भूमिका
३. वेदों में नारी का अधिकार

आपको किसी एक विषय पर आलेख प्रस्तुत करना होगा । आलेख प्रस्तुत करने का निर्धारित समय - १० मिनट। प्रश्नोत्तर के लिए ५ मिनट । पंजीकरण के लिए २०० रुपये

अधिक जानकारी के लिए आप आर्य सभा मॉरीशस से निम्नलिखित पते पर संपर्क रखें – आर्य भवन, पोर्ट लुई, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई ।

Dear Brothers & Sisters,

INTERNATIONAL ARYA MAHILA SAMELAN

23 – 25 November 2017

The Arya Sabha Mauritius in collaboration with Mauritius Arya Mahila Mandal is organizing an International Arya Mahila Conference on 23rd, 24th and 25th November 2017.

Venue : Indira Gandhi Centre for Indian Culture, (IGCIC), Phoenix

The main aim of this conference is to discuss the duties and responsibilities of women in the modern world. Members of the Arya Samaj are kindly invited to take an active part in this conference to make it a successful event. They can participate in several ways by :

- providing financial assistance
- sending a paper on the topic
- their presence in all the activities

The main topic for the papers is : **"Duties and responsibilities of women"**

This topic is subdivided into :

(1) Women's education and character-building of children
(2) The role of women in the preservation of religion, culture and language
(3) The rights of women according to the Vedas

Presentation of papers will last 10 minutes each.
Date limit for sending the papers in English or Hindi – 31 October 2017
Registration fee for local participants – Rs 200/=
Note : For further details, please contact :

1. Mrs. Yalini Rughoo Yallappa
Tel: 5771 2073

2. Smt. Ratna Bhooshita Puchooa
Tel : 5816 9125 / 696 6674

3. Mrs. Lilamunnee Kureeman
Tel : 5787 9210 / 431 5114

4. Arya Sabha Mauritius
Tel : 212 2730 / 208 7504

LES DEUX AILES DE L'AME

आत्मा के दो पंख

Narainduth Ghoorah, P.M.S.M, Arya Bhooshan

ओ३म् अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम् धीराणां ये नस्तद्वि चचक्षिरे ।।

यजुर्वेद ४०/१३१

Om Anyadevāhur-vidyāyāha anyadāhur avidyāyāha.
Iti shushruma dhirānām yé nastad vichachakshiré.

Yajur Veda 40/13

Glossaire / Shabdārtha

Ye – ce celui, **Vidyāyāha** – (i) le savoir / la connaissance (jyāna), (ii) avec la spiritualité (brahmavidya/dharma) les exercices spirituels, (iii) la connaissance qui se rapporte à l'âme et à Dieu (yoga), **Anyat eva** – il y a un but spécifique, voire sublime à atteindre la félicité suprême (Moksha), **Ahuha** - dit-on, et **Avidyāyāha** – (i) l'ignorance / connaissance incomplète ou défectueuse, (ii) avec la connaissance du monde matériel (bhowtik vidyā) et celle acquise des gourous, de nos livres sacrés, des activités religieuses et spirituelles (satsangh), (iii) actions (karma) dans le contexte spirituel (yoga), (iv) c'est ce qui nous prévient et nous empêche de commettre des actes répréhensibles (péchés) et nous évite les conséquences (les châtiments du Seigneur), **anyat eva** – il y a un objectif différent et très bénéfique : l'apport considérable du monde matériel qui nous aide à subvenir à tous nos besoins et qui procure tout le confort et la sécurité de notre vie. **ahuha** – dit-on, **dhirānām** - les sages de tout temps ont transmis minutieusement et avec beaucoup de dévouement, **Iti** – ces paroles divines en provenance de Védas, **maha** – à nous, ainsi qu'à toutes les générations, **tat** - à ce sujet, **vichachakshire** - par des sermons.

Interprétation / Anushilan

Ce verset a pour thème principal les aptitudes naturels de l'âme (ātmā) qui peuvent lui ouvrir la voie du salut, c'est-à-dire, du bonheur éternel (moksha) durant son parcours terrestre de par sa naissance dans le corps humain accordée par la grâce du Seigneur selon les mérites de ses bonnes actions (karma) de sa vie antérieure.

L'âme est dotée de deux aptitudes naturelles pour gérer sa vie sur la terre :

(i) L'acquisition de la connaissance (jyāna)

(ii) La transformation de sa connaissance acquises en action (karma) et récolter ses fruits.

Ces aptitudes, (semblables aux deux ailes puissantes de l'oiseau rapace qui lui permettent de voler très haut dans le ciel et d'atteindre des hauteurs vertigineuses) aident l'âme à s'élever dans le firmament de la spiritualité, au-dessus de tout attachement terrestre et de sattva guna, de se purifier, de se conformer au 'Ritam' (la loi éternelle de l'univers) et d'atteindre le 'Satyam' (l'étape finale de la méditation) le bonheur suprême (Moksha).

Sachons aussi que l'âme n'agit qu'au moyen du corps humain qui lui est attribué par le Seigneur.

Toute connaissance acquise par l'homme ne lui sert à rien et ne lui est aucunement bénéfique si elle n'est pas traduite en action.

Pour que l'âme puisse réaliser ces deux objectifs, l'Être Suprême a pourvu au corps humain les moyens suivants :

(i) **Cinq principes de sensation** (5 jyāna indriyans) qui sont **la vue** (les yeux), **l'ouïe** - les oreilles, **l'odorat** - le nez, **le goût** - le palais, la langue, **le toucher/la sensation** – l'épiderme

(ii) **Cinq principes physiques / d'actions** (5 karma indriyan), **la langue** (parler), **les mains, les pieds, les organes génitaux et l'organe d'excrétion.**

Tout ceci aide l'homme (l'âme incarnée à vivre sa vie) à prendre connaissance, à penser, à discerner et à agir durant toute sa vie.

Le verset précédent nous apprend que pour le cheminement d'une vie bien réussie, il faut qu'il y ait une synthèse de la spiritualité et du matérialisme, voire de la connaissance et de l'action dans le contexte du yoga ('jyana' et 'karma'). Ce n'est que cette pratique qui mène l'homme vers le progrès et le but ultime de sa vie -- la félicité Eternelle.

Ainsi quand un être humain, par la pratique des exercices spirituels (le yoga) atteint la condition supérieure (samādhi), son ignorance se dissipe, son âme est purifiée. Il entre en communion parfaite avec L'Être Suprême et il est doué des plus grandes qualités telles que le mérite, la vertu et des pouvoirs étonnants (surnaturels). Il constate à ce moment qu'il n'est par le corps physique humain, mais une âme (ātmā) – une entité spirituelle. C'est à travers des yeux spirituels de son âme et pas de ses yeux biologiques qu'il peut voir L'Être Suprême. C'est un moment sublime et de joie intense de sa vie qu'aucune langue ne peut exprimer. Une telle personne est appelée un 'yogin'. Avec la vertu et le pou-

voir ainsi acquis un yogin s'en sert pour le bien de l'humanité seulement.

Pour établir (prouver) la proposition de Védas mentionnée plus haut un regard sur la vie du Maharishi Dayānanda Saraswati, qui fut un vrai yogin que le monde a connu, est amplement suffisant.

Par la pratique du yoga Mahārishi Dayanand Saraswati jouissait d'un pouvoir surhumain, d'une force herculéenne, d'une mémoire hors-pair, d'une grande intelligence, de beaucoup de bon sens, et d'un grand charisme. Il était intrépide et il pouvait anticiper sur l'avenir (prédire des évènements imminents). Il pouvait entrer en communication avec un autre yogin se trouvant très loin de lui. Il avait un regard puissant, une forte personnalité, et un esprit vif. Il avait des réponses percutantes à toutes les question qu'on lui posait. Il pouvait lire la pensée ou deviner l'intention des gens à leur grand étonnement, calmer l'ardeur des adversaires et d'autres personnes qui venaient l'attaquer ou l'humilier, et transformer plusieurs opposants, les plus coriaces, en ses disciples.

Personne ne pouvait l'affronter avec succès (le vaincre) dans une discussion théologique, voire une joute homérique (shāstrārtha).

Nous citons le témoignage d'un de ses disciples qui s'appelait Sahajānand et qui fit état d'autres pouvoirs dont bénéficiait le grand Rishi Dayanand Saraswati.

(i) Il avait vu, à plusieurs reprises, son gourou assis en posture lotus (padmāssan) sur l'eau pour sa prière et sa méditation.

(ii) Certains jours il avait constaté que son gourou, assis en posture lotus en prière et méditation, s'élevait au-dessus du sol dans la même posture.

(iii) Il avait même témoigné que son gourou restait quelquefois en méditation, atteignait la condition supérieure (samādhi) et restait dans cet état pendant plus de 24 heures.

Il y a encore des faits du pouvoir de Yoga dans sa vie que l'on doit savoir. Il avait prévu qu'il ne serait plus en vie au-delà de 1883. Plus de 14 fois il put échapper à la mort en rejetant de son estomac la nourriture ou la boisson empoisonnée que ses adversaires lui avaient offerte. Il venait toujours à bout des nervis ou des hommes de main (tapeurs) à la solde de ses opposants.

Ce ne sont que quelques situations vécues de ce grand Rishi. Mais le dernier empoisonnement par son propre cuisiner/serviteur lui était fatal car il ne se doutait de rien et ne s'en aperçut, que quand il était trop tard.

Selon ses médecins traitants, un être ordinaire allait succomber en moins de trois minutes à ce genre d'empoisonnement. Mais le grand Rishi Dayanand, par la force du yoga, ne flancha pas, il lutta sans relâche et il put vaincre la mort, en la repoussant à sa guise, toute en retenant son âme dans son corps empoisonné, en gardant toute sa lucidité, en faisant sa prière et sa médiation, et en s'entretenant avec ses disciples et ses sympathisants jusqu'à son dernier souffle, tout comme Bhishma Pitāmaha dans Mahābhārata.

Ce n'est pas la mort qui avait contraint son âme de quitter son corps physique, mais c'est bien lui seul qui avait choisi, comme tous les ascètes, les sages, et les yogins, le moment propice de délaisser son enveloppe mortelle le jour de divali pour aller vers la Seigneur, son maître suprême et atteindre la félicité éternelle.

Dans le Védas il y a mention de tous les domaines du savoir : les Arts, la Science, la Technologie, la Médecine entre autres. Par exemple la construction des avions, et des bateaux, la fabrication des armes efficaces etc.

A ce sujet, selon ses recherches le Professur Basdeo Bissondoyal, le grand sage connu de tous les mauriciens, a mentionné dans son avant–propos du Satyartha Prakash en Français de Louise Morin, la construction du premier avion en 1895 par un scientiste indien, Talpadé, qui puisa toute la connaissance technique à ce sujet des Védas et il nomma son appareil 'Marout Sakhā'. Il effectua son premier vol d'essai avec succès sur la plage de Chaupati en Bombay, en 1895 devant une grande assistance. L'avion décolla, s'éleva dans les airs à une hauteur d'environ 1500 pieds du sol, parcourut une certaine distance et atterrit en beauté (sans aucun problème) à la grande satisfaction du scientiste. Il y avait une mention de ce grand évènement historique dans la presse de l'Inde et d'ailleurs. Sachons aussi que les frères Wright (Willbur et Orville) en Amérique construisirent leur premier avion en 1902 et 1903, et effectuèrent leur premier vol avec succès.

Tout ceci est le concept védique de la vie humaine sur la terre, prêché à toutes les générations par les sages et a pour objectif principal le bien-être, le progrès, la prospérité et la protection de toute l'humanité.

Cependant tel n'est pas le cas dans le monde moderne où le concept védique de la vie humaine n'existe pas. De nos jours la gestion de la connaissance et de l'action de l'homme n'a aucun but spécifique pour le salut de l'humanité et pour la spiritualité. Il n'y a que le matérialisme aveugle.

Certes on a réalisé beaucoup de progrès matériel par les découvertes et les inventions de la science et de la technologie pour rendre la vie confortable et facile. En même temps on est en train de fabriquer des armes, les plus meurtrières pour anéantir (détruire) l'humanité. Il y a la prolifération de l'immoralité, de la corruption, de vol, des fraudes, du terrorisme, du banditisme, de la contrebande, de la drogue, et d'autres fléaux qui sévissent impunément. Il y a une absence totale de l'humanisme en provenance des Védas pour endiguer ces fléaux du matérialisme qui engendrent une ambition démesurée, la dictature, la soif du pouvoir entre autres parmi les gens. Tout ceci gangrène la société et entraine dans son sillage la décadence, les désordres, la révolte, la guerre, la terreur, les massacres des innocents, la déstabilisation des gouvernements de plusieurs pays, la ruine, la désolation, la pauvreté, la famine, les maladies et une menace perpétuelle de la paix dans le monde.

Seule l'éducation de nos enfants et de nos jeunes, agrémentée des valeurs humaines et de la spiritualité comme préconisée par les Védas peuvent sortir l'humanité de cette triste situation catastrophique.

YOUTH MAGAZINE

Deepavali and Rishi Nirvan

Dharamveer Gangoo, M.A., P.G.C.E., President Mauritius Arya Yuvak Sangh

On the occasion of Deepavali and Rishi Nirvan, I seize this golden opportunity to wish one and all a pious festival. As we all know that Divali is the festival of lights, it is an occasion to open the gates of the mind and visualize the presence of our near and dear ones far and wide with the thoughts that they may be happy and may the light of love always emanate from their hearts towards all fellow beings.

Besides, Deepavali is the festival where we express our gratitude to the Almighty God. It is the day when we pray to lead us from 'untruth' to 'Truth', 'from darkness to 'Light', and from 'mortality' to 'Immortality'. The ceremony of illumination marks the triumph of good over evil, truth over falsehood love over hatred. It dispels darkness. This light stands for all that is good and wonderful.

Moreover, Divali gives us the golden opportunity to kindle our own inner light and improve our thoughts and actions. We should pray for the well-being of one and all.

On the occasion of Deepavali, we also pay tribute to Swami Dayanand. Swami ji attained Nirvana on Deepavali day. It is our binding duty to ponder and analyse the works of Rishi Dayanand. He paved the way for everyone who wants to tread on the path of righteousness. The Satyartha Prakash, provides a profound and deep study and reading for all of us endeavouring and striving to attain the true path of Vedic life.

Therefore, we rely on the vitality and inspiration of our youth to carry on the laudable work done by Swami ji. We need the youngsters to join the Mauritius Arya Yuvak Sangh and contribute to the cohesive force and discipline for the benefits of one and all.

Hence, let the Light of Deepavali enter our thoughts and motivate our actions so that we move on the path of Dharma.

May Deepavali bring us all prosperity, health, peace and happiness.
May the festival of light fill our minds with positive thoughts.
Deepavali Abhinandan

The Youth Magazine

Volume 14, October 2017

EDITORIAL BOARD :
Mr Dharamveer Gangoo, *M.A.,P.G.C.E, Chief Editor*
Mr Sarwanand Nowlotha, *B.A, Associate Editor*
Prof. Soodursun Jugessur,*D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhooshan*
Dr Oudaye Narain Gangoo, *M.A,Ph.D, O.S.K, G.O.S.K., Arya Ratna*
Mr Narainduth Ghoorah, *P.M.S.M, Arya Bhooshan*

PRODUCTION :
Mr Satterdeo Peerthum, *O.S.K,C.S.K, Arya Ratna*
Mr Prabhakar Jeewooth, P.M.S.M.
Mrs Poonum Sookun – Teeluckdharry, *Barrister at Law, LLM*
Dr Deorattan Leechoo

FINANCE :
Mrs Rutnabhooshita Puchooa, *M.A,P.G.C.E*
Mrs Aryawatee Boolauky, *MSc, P.G.C.E*
Mrs Sangeeta Samputh, *B.A*
Mr Ravindrasingh Gowd, *Agricultural Chemist*

WEBSITE :
Yogi Brahmadev Mokoonlall - *Darshanacharya*

Published by :
The Mauritius Arya Yuvak Sangh
c/o Arya Sabha Mauritius,
Port Louis
Tel # : 212 2730, 208 7504
Fax # : 210 3778
e-mail :
aryayouthmagazine@gmail.com
www.aryasabhamauritius.mu

Divali and Arya Samaj

Prof. Soodursun Jugessur,D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhooshan

Divali is celebrated for many reasons by Hindus, reasons linked with mythological stories and events. For the Arya Samajis, this is a day of celebration since the founder of this movement attained salvation or Samadhi on the evening of 30th October 1883 in Ajmer, when Divali is usually celebrated all across India. We call it Rishi Nirvan Divas. We are very grateful to him for without him we would not be where we are today. He instilled in us a sense of rationalism that makes us question superstitious practices in any form and adopt a life based on vedic principles.

The philosopher and past President of India, Dr. Sarvapali Radhakrishnan, on Shivaratri day of 1964, wrote about Maharshi Dayanand Saraswati in laudable terms as follows :

' Swami Dayanand ranked highest among the makers of modern India. He had worked tirelessly for the political, religious and cultural emancipation of the country. He was guided by reason, taking Hinduism back to the Vedic foundations. He had tried to reform society with a clean sweep, which was again the need of the day. Some of the reforms introduced in the Indian Constitution had been inspired by his teachings.'[1]

Before going further, readers should not mistake another recent Sri Swami Dayanand Saraswati of Arsha Vidya,Gurukulam, a proponent of Advaita Vedanta, who died only recently in 2015. On the other hand Maharshi Swami Dayananda Saraswati was rather a proponent of Vedas and founder of Arya samaj.

When we celebrate Divali, and Rishi Nirvan Divas, we should teach our children not to eat too many sweets, but mix them with salty delicacies as well. Otherwise we become more inclined to get diabetes later. Another bad practice that has crept in our mores is the burning of crackers. Children like playing with crackers and we should educate them

into understanding that burning too many crackers invariably pollutes the atmosphere and releases toxic sulphur dioxide and hydrogen sulphide gasses around. In some places the smoke resulting from the crackers creates so much smog and fog, as we see in big cities, that visibility is significantly reduced. Not only is burning crackers injurious to health but we tend to spend thousands of rupees in buying them to please the children, often just to compete with neighbors who follow traditions blindly.

Divali is another occasion when we take the solemn pledge to abstain from speaking untruth, and pot in practice the dictum of ' Asatoma sad gamaya, tamasoma jyotir gamaya' May God lead us from untruth to truth and from darkness to light. This pledge is not to be taken in a light vein as we see so many evils affecting our society. Divali should rekindle the flame in us!

sjugessur@gmail/com

DIVALI - The significance of Light

Sarvanand Nowlotha, B.A., Secretary Mauritius Arya Yuvak Sangh

Divali has become a global celebration that has transcended barriers of religion, caste, creed, colour and status. Few years back it was the then American President Barrack Obama in the White House who celebrated it with pomp and festivity in all its splendour-an event telecasted worldwide. Along with rejoicing, it is also a solemn moment for reflection on the festival of Light as to what makes it so special.

Divali brings the theme of "Light" in the limelight with a bang. The ancient Hindus (of Vedic lore) have scriptures and mantras which abound in the importance of Light; the light of knowledge. In these writings, Light has been eulogized and through prayers we appeal to God to enlighten our mind / intellect. In fact, the sages (Rishis) explained the concept that Light is life itself.

Over time, with evolution, science discovered that without Light there would be no oxygen- an essential factor for survival. Plants use Light to make their food and release the vital oxygen which sustains Mankind. Life on earth goes on through Light. Even at night, during the absence of sunlight, Light is needed to make life go on. Man has had to master electricity producing Light. Therefore, be it day or night, Light is the sine qua non element for the world to survive. With ***Light***, life is ***bright*** and without it, life is a ***blight*** making existence - a sorrowful plight.

Moreover, Light drives away darkness. Commonly associated with the devil, darkness connotes nefarious and behind-the-veil activities. Darkness is fright. It is pessimism, despondency and defeat. *Tamaso ma jyotirgamaya,* in prayers relates to moving out of the darkness of ignorance towards the light of true knowledge. Light is welcomed through celebrations whereas darkness is unwanted.

In a nutshell, Light is next to Godliness. So, on the occasion of Divali, we should illuminate not only our homes but our mind and heart as well. It is time to rejoice in a proper way, but also time to thank God because Light does not come in the life of all. We are lucky if it is in our life and if it is not, then, let us engage ourselves in communion with Him because God is Light Himself.

DAV COLLEGE SOUTH ROSE-BELLE

Some time back management informed readers, through an article published in one of our magazines, that a private secondary school is in the process of completion to welcome grade 7 to grade 13 students in 2018. We are now in a position to provide further information regarding same and hopefully this will be beneficial for everybody.

After investing massively in DAV College Morcellement St. Andre in the North, which is by any standard a mega project, we are now pleased to announce another educational project but this time in the South, more precisely at Rose-Belle. Our dear brothers and sisters, particularly from the North have benefited extensively because it provided opportunities, facilities and it has become a center for international conferences and great events.

As a dedicated organization we believe in democratization, fairness and, above all, farsightedness. The school at Rose-Belle comes after deep reflection. Negotiations went on with the Ministry of Housing and Land for years to secure a plot of land where Ex-Rose-Belle Sugar Estate was located. After long and painful discussions the deal materialized.

We had several meetings with the Ministry of Education for a secondary school but Government no longer gives license to run a private school under the grant scheme with the PSSA. Our learned and well-informed members understand that Government cannot make a separate case for Arya Sabha. In the given circumstances, we had only two options:

1. Leave the land idle and let Government take possession of.
2. Go ahead with a paying school and avoid losing 3 acres of prime land.

Any sensible person will support the second option. As for us, we will never forfeit an asset worth so much and received after so much of struggle. The opinion cast in the public by certain people that the project is a disaster is simply

a terrible mistake on the part of the opposition. We invite readers to recall that we had similar hostile opposition when we embarked on the construction of the DAV College of Morcellement St. Andre. Today that same school is sailing safely and surely and is earning dividends. It is an icon in the North generating money to pay its own debts and a surplus to sustain new projects. Had we listened to them, we would never have benefitted so much in the field of education.

Somewhere in Rig Veda we read the line : *"Let us converse and move together."*
We accept constructive criticism. If you have suggestions, do not hesitate to contact us or write to us expressing your fears and apprehensions thereof.

There are many private paying schools all over the island, some of them run by religious organizations. We want to play our role, and make our contribution in that direction, but of course, in our own way. But this is something we should have done long time back. Our own people, even those who have the means, reluctantly send their children to some of these paying schools. What else can they do when there is none to answer to their needs?

We now provide an alternative and rest assured that our vision of a private paying school will not be less than what others propose. On the contrary, we will incorporate in our rational all those values that we have been preaching. Secondly, through donors and well-wishers, our subsidized school fees will be moderate making it accessible and affordable to everyone. Is this not a noble and well-calculated project? Parents who are unable to pay the reduced fees will, on justification, be exempted from payment.

Making ill-founded and baseless allegations is regarded reprehensible in our organization. Creating and inventing criticism with a view to obstruct a moral endeavor is not a strategy that will be accepted by people who are endowed with wisdom and goodwill.
We confirm that posts have been advertised and we will soon proceed with interviews. Rest assured, we will be guided with the same philosophy so that the best candidates are recruited to meet our vision of our private school. To say that some people have already been promised a job when the selection exercise has not even started is incorrect.

Let it be clear to our members and well-wishers and even those who seemingly oppose us, that our action is transparent, democratic and well-calculated. We cannot rest on our laurels and let time fleet by watching multi-nationals invading our island with private schools. We have to do something and that is exactly what we are doing.

Let us recall that we were the first secondary school that had voted for free bus fare as an assistance to needy students as well as to those coming from far.The Government had approved free bus fare for all students sometime later. We are now again the first private school subsidizing school fees.

Doubt and fears have left many still thinking and brooding. People welcome our move and we keep receiving praises, donations and support. A few hostile opposition will not deter us. We, however, welcome and appreciate everybody's collaboration and look forward to working together to make our organization prosper.

Dr. O.N. Gangoo
President, Arya Sabha, Mauritius

D.A.V. COLLEGE PORT LOUIS

1, Maharshi Dayanand Street Port Louis – Tel 212 4059, 208 0311

RUBBER TYRE COMPETITION

The Ministry of Health and Quality of Life in collaboration with the Ministry of Education and Human Resources, Tertiary Education and Scientific Research, UNDP and Global Environment Facility initiated a rubber tyre competition, under the sustainable Management of Persistent Organic Pollutant project. The purpose of the project was to encourage students to find innovative ways to recycle old tyres under the Integrated Vector Management Concept thus avoiding recourse to chemicals for the control of mosquito populations.

Our DAV Environment Club, under the leadership of Mrs Madhvi Nunkoo Etwaroo, enthusiastically took up the challenge. Various intricate means were devised to collect and transport used tyres found in river beds, ditches, wastelands and garages. A herculean task indeed! The dedication with which the tyre garden was designed finally brought honour to the college and we have been awarded the "Best understanding of IVM Concept" prize along with a cash prize of Rs 10,000, a shield and Certificate of Participation for the participants.

Kudos to our teachers and students who, we are sure, have been sensitized for life and would be the best ambassadors for the protection of the Environment.

My visit to Mauritius

Myself (Dr Ramesh Gupta), my daughter Anupama, Varun (Son of Dr Balvir Acharya) and Dr. Naresh Dhiman arrived in Mauritius on 04 September 2017. Shri Harrydev Ramdhony, Vice President of Arya Sabha Mauritus was kind enough to meet and greet us at the airport. He had arranged for our conveyance. Pravin, the driver, was with us with his vehicle for the next 5 days.

We visited the Arya Sabha headquarters in Port Louis where we met the President Dr. Oudaye Narain Gangoo, and several members of the Managing Committee and staff. There is a D.A.V. Secondary School in the backyard. It seems this is the most active of all the Arya Samajs on the planet. We were then treated to a special lunch at the Gayasingh Ashram (a Residential Care Home for Women), Port Louis, run by the Sabha. The love, care, commitment and cleanliness were impressive. We also went to some parts of the island, a nation of 1.3 million people. During the stay we took part in two 2 more functions. One of them was the Poornahuti Yajna in the context of the Shraavani Mahotsav / Veda Maas. This was a "multi-kund havan" (Bahukundiya Yajna) at the Bois des Amourettes Arya Samaj, opposite the sea-shore. The President is a bright, committed and hardworking young man. Commitment to the principles and practice of Arya Samaj and the teaching of Rishi Dayanand could be seen in its purest form. The other function was a blood donation cum open day at the Smt Babooram Ashram (another residential home in the southwest) run by the Sabha. Here, the chief guest was the wife of the incumbent Prime Minister, Mrs. Kobita Jugnauth. We witnessed the vibrant Indian culture and national pride as well as respect for the Arya Samaj at its best. The son and daughter of Harrydev ji were present at the airport to bid good bye to us when we were leaving Mauritius.

Mauritius is a small island nation in Indian Ocean, off the coast of Africa, east of Madagascar, about 788 square miles, apparently formed about 9 million years ago by undersea volcano. It was occupied first by Dutch, then French and then taken over by British in 1810. It became independent in 1968. Since India was a British colony and British needed workers for the sugarcane cultivation, over 400,000 people signed up from India. Over 50% of the population of the country are Indo-Mauritians. The main language is creole, which is mainly derived from French. People also speak English and Hindi. The island is clean, extremely safe, and the ocean has crystal clear waters. People are simple, honest and bright. It is a paradise for honeymooners from India. Indian food is abound with many good Indian and multi-cuisine restaurants. People live in what appeared to be a remarkable religious, social and cultural harmony.

There are all kinds of Hindu mandirs, including about 300 Arya Samaj mandirs in Mauritius. This number of active Arya Samaj mandirs with good attendance is higher than the entire city of Delhi. As I have mentioned, they truly practice Dharma as prescribed by Swami Dayanand Saraswati.

I am personally thankful to the Arya Sabha of Mauritius, presently under the leadership of Dr. O N Gangoo. There are no words to express my gratitude towards the simple, kind hearted and knowledgeable Shri Harrydev ji Ramdhony. I have no doubt that if we practice Arya Samaj like practiced in Mauritius, Arya Samaj will come back to its glory in India and rest of the world with full force.

Ramesh Gupta, MD, FACP, FACG, Gastroenterologist
Former President of Arya Pratinidhi Sabha America
rameshamita@gmail.com

DEEPAVALI & THE INNER LIGHT

Sookraj Bissessur, B.A. (Hons)

"As the lamp which burns subtly and brightly, to bring inner and outer joy, the inner fire should burn out jealousy, anger and other vices and make place for virtue." That is the real symbol of Deepavali.

Since time immemorial the sun is shimmering aflame. Without sunlight only darkness would have prevailed and all planets would have been cold and completely lifeless! The sun is a true example of the multifarious gifts that nature bestows upon human beings, without demanding anything in return. Indeed, a true example of 'altruism', doing good to others! The sun is blamed when its scorching heat dries plantations, plants, lakes, reservoirs and rivers. The ozone layer, a natural protection, shields the earth from direct sunlight. But, alas, we human beings have been destroying it; in some way we are contributing to put fire to our own house, the world.

Candles and lamps burn to light up our houses. Sadly, man is also burning through mere ignorance; jealousy, animosity, antipathy, desire, greed, hatred, conflicts, lust, etc., as the inner fire are producing misery both for the universe and for himself.

Symbol of the inner fire of Deepavali

The light of Deepavali symbolises wit, wisdom, wealth, intelligence and love, the fire within the enlightened

one. Besides all these, Divali also represents the ardent and burning light of renunciation.

'Havan or Yajna' – symbol of all fires

The untold sacrifice to nurture her offspring day and night depicts the fire burning within the mother. With passion modern lovers are aflame. The continuous desire for power is another fire burning inside most of us. 'Havan or yajna' is a fire, symbolical of all these fires. Food is burnt into life's energy by the gastric fire. The fire and light of wisdom burns vices and bitterness into ashes making place for virtues and enlightenment. In a nutshell, light is the path of life, marvellous and mysterious indeed.

Deepavali : the lighting of lamps

The lighting of lamps also symbolises the triumph of good over evil. Deepavali denotes a row of light. That tradition is today seen as rows of lamps, rope lights, coloured bulbs, etc. and the entire scene turns into a brightening and bejewelling night of light. The enthralling fireworks and the thrilling crescent of exploding fire crackers add to the beauty of the night.

Maharshi Dayanand Saraswati

Deepavali is also to commemorate the Rishi Dayanand Nirvan Diwas. That event has enhanced the significance of the festival of light as Swamiji's teachings are enlightening; they instil, in our minds, the spirit of truth and social justice. Deepavali night: when on this numerous edifices and buildings are beautifully adorned with light, let every 'human being' turn to think about Swami Dayanand Saraswati who brought the light of true knowledge to us. 1883 A.D., Ajmer, Deepavali night: Swamiji breathed his last with the following philosophical words: 'O Lord! Thy will be done". His life inspires us to lead and live a life of glory; his demise motivates us to live and leave this world courageously. All honour to him.

Our sole aim, as an Arya Samajist, is not just to recall the Nirvan of Maharshi Dayanand. It is time to analyse the what, how and why Swamiji lived for, his teachings, his way of doing things and the multifarious ways he solved problems; an illuminating source of great wisdom. A profound study of the 'Satyartha Prakash' clears up the path to realize the Vedic light.

Asato maa sadgamaya.
From Untruth, lead me to truth!
Tamaso maa jyotir gamaya,
From Dakness, lead me to light!
Mrityor ma amritan gamaya
From Death, lead me to immortality.

17.09.2017 @ L'Avenir Arya Samaj

Farewell address by Acharya Ashish Ji, Darshanacharya

Acharya Ji thanked (i) the Almighty for the opportunity he had to be in our midst and to hold several programmes on Yog (Vedic meditation), (ii) Shri Avinash Ramdhuny and family for sponsoring his ticket as well as the hospitality, (iii) the members of the L'Avenir Arya Samaj, other Samajs, as well as well-wishers across the island who motivated by a keen desire to know more about spirituality took various initiatives as organisers and participants to the various programmes, (iv) the International Vegetarian Association (IVA), and (v) last but not least, Arya Sabha Mauritius who provided amongst others - the logistics, conveyance facilities, and arranged for programmes on the national Radio and Television channels. He expressed his appreciation for the environment nurtured by bhajan singers and the audience who understand the meaning of these bhajans whereas in several places he has seen people singing very well without understanding a single word.

We need to be aware that God is ever watching us, noting who amidst us (as his sons and daughters) is paying attention to him: who is catching and following the inspiration that he is continuously giving us. Our senses (tongue, nose, eyes, ears & skin) simply fail to enable us to catch that inspiration as they drive us to the external world. And it is only when we focus our attention towards the inner self that we shall perceive God's signals …and that is the start of the internal journey …the path of Yog.

Knowledge of the history of any nation or community is very important for generations to come. The various sacrifices of our ancestors constitute an immense reservoir in which after each plunge we shall come out better inspired to live the values and culture which they had preserved in spite of all the various adverse situations. These values are important parameters for us to lead an ethical (*dharmic*) life.

Maharishi Dayanand Saraswati never travelled abroad. The Satyārtha Prakāsh and the Samskāra Vidhi reached Mauritius through Bholanath Tiwari, an Indian soldier who served the British colonial rulers under contract. On his return, he gave the book to the milkman who passed it on to Khemlal Lallah. The latter, moved by the contents of the Satyārtha Prakāsh, started sharing the knowledge with his friends. They made several moves to establish the Arya Samaj in Mauritius. The works of various stalwarts, amongst others – Dr. Chiranjeeva Bharadwaja, Swami Swatantranand, the numerous sanyāsis and āchāryas, Pandit Cashinath Kistoe, Shri Mohunlall Mohith have left an indelible footprint in the history of Mauritius.

The Vedic philosophy, as understood through the books of Maharishi Dayanand Saraswati and the subsequent foundation of the Arya Samaj had a deep imprint on the lives of all people of Indian origin. Regrettably, politics played the game

of 'divide and rule.' Nevertheless the coloration is bound to stay. The problem of conversion of slaves, indentured labourers and other immigrants is not singular to Mauritius, in fact it is a worldwide issue. But in Mauritius, as opposed to other places, the Satyārtha Prakāsh became the one-and-only tool, the *Sanjeevani buti*, to fight conversion. All the strategies of the colonial masters simply failed in front of the determination, sacrifice and painstaking efforts of our ancestors.

Today's flaring problem of conversion is to be tackled in the same way, through proper education, with emphasis on the need to experience the values in our own culture first. And to succeed, we need to change our outlook. All our ancestors had a family life. They worked from sunrise to sunset in the fields, building resilience to adverse weather (sun, rain, etc.). Yet, they ably managed their time between works, informal learning, child-raising, and even spared time to preach the living values to relatives, and peers; they led various initiatives as role models – truth across their thoughts, speech and actions; and more importantly, they assumed collective responsibility to disseminate the Vedic knowledge among the population. They did not shy away nor left it on the shoulders of a few.

Swami Swatantranand Ji visited Mauritius at a time where transport facilities were scarce. Sundays were very busy days conducting congregational gatherings (*satsanghs*) with a view to enlighten the masses on the need to live the Vedic values in day-to-day life. He used to walk several kilometres and often had to rush from one place to another, attending several programmes in remote localities. In the haste, hosts often forgot to serve him lunch. He had a choice: either stop going to educate the masses or continue without food. His inner voice (the divine inspiration) was so forceful that he resolved to keep Sundays as fasting days and responded to the call to serve society at large. That was one practical example of changing the rules to adapt to the situation for societal welfare (*tapa-tapasyā*) …nowadays we find people changing the rules to suit their selfish motives. Late Shri Mohunlall Mohith toed the line of his mentor, Swami Swatantranand.

Nowadays people do not want to take the plunge in social matters. The excuse is a very lame one; sitting on the fence, they say: 'We do not have time.' However, he who has a strong willpower always finds time and leads a balanced life. Setting priorities, he does not indulge in time wasting activities. Likewise people find excuses …not to pray, not to get involved in activities towards the uplift of the physical, mental / moral / spiritual and social welfare of relatives, people around and society. In the name of modernity, regrettably, the mantra is: me, mine and myself!!! The divide is felt not only at societal level but within the family units.

It is not late to give it a try. Those who, on the pretext of not having may start by allocating: (i) some 10 minutes twice weekly, 5 for vocal and 5 for silent *Gayatri mantra jāpa* (recitation), (ii) plus another 10 minutes twice weekly only to speak about each other activities – the positives and negatives as a sharing of experiences and as well as an opportunity to learn from each other. Listening is a key factor to good communication between the family members. So let us light the fire from the spark that is inside us, lest it will be too late after the spark has doused out.

As a regular feature, it consolidates the sense of belonging to the family as well as discipline. Gradually everybody's interest would be aroused and the frequency may be increased to every alternate day and in the long run on a daily basis. *Sandhya mantras* may be introduced in a dosed manner. Likewise we may start giving some 10-15 minutes weekly for Havan / *agnihotra*. Even if we do not know the mantras, we may proceed with Achamana (sipping of water thrice); *anga sparsha* (touching of the limbs) which conveys a sense of physical cleanliness, then light the fire in the Havan kundh. After a few *āhutis* (oblations) of ghee to allow for the fire to be well-lit, we start āhutis of both ghee and samāgri (medicinal herbs). And if we do not know the mantras, we may recite the Gayatri mantra with svāhā at the end. The atmosphere of the house will definitely change with the fragrance of the yajna vapours. At the same time the inner fire will be so well ignited that the family will look forward to learning the processes as a personal initiative. Such efforts are indeed rewarding and are bound to stick to us like our skin. The inner peace arising from mantra recitation is a very low cost product …some quality time for ourselves and for the family …those who pray together stay together …common would be our thoughts, speech and actions within the conviction of *'sangacchadhvam samvadadhvam…'*.

The need of the day is: every single person should affirm himself and play his role as an individual, as a member of the family and as a member of society to the best of his abilities. We should not hide our heads and pretend that there is no the danger as we become easy targets …the ostrich game. We all believe in the law of karma, that is - *we shall reap as we sow.* If we fail to inculcate samskāras (virtue / values) among our relatives and friends we should be prepared to face the consequences. Definitely we shall reap the fruits of all good endeavours. We perhaps do not realise the importance of small daily initiatives in the proper direction and cast them aside. Working on them produces astonishing results which are noted only in the long run when we go on a flashback. Let us start now! Going against that natural urge will only lead to regrets in due course.

Acharya Ji appealed to the audience for spiritual alms (*ādhyātmik dakshinā*) rather than the fruits and other donations. He emphasized that the best dakshinā would be that each of us start by giving time to ourselves, more so to spiritual matters in life with full devotion (*shraddhā purvaka)*, even for the 5-10 minutes on a weekly or bi-weekly basis. The inner satisfaction derived from proper behaviour has no monetary value …that is real tarpana. Things have to be kept as simple as possible where everybody feels comfortable. Keeping the days separate for *Gayatri mantra jāpa* and the time for sitting as a family will heal the fracture common to nearly all families where the family members communicate very little in spite of living under one roof. These activities are bound to enhance the communication lines between husband and wife, parents and children and among siblings.

Acharya Ashish ji concluded that these efforts would lead everybody to become each other's well-wisher on a 100% basis. The barriers - communication, language, misunderstanding, etc. will all fall by themselves. We shall accept the differing personality of each other but the commonality would be visible "great at heart."

The programme started with Yajna, a few bhajans and the welcome speech of the Secretary of the Samaj and Dr. O. N. Gangoo, President of the Sabha concluded the vote of thanks to Acharya Ji for his inspirational programmes, to all present and to all those who spared no effort to make the visit a fruitful and memorable one.

Bramdeo Mokoonlall
(from Kurukshetra University 05.10.2017)